KNOWLEDGE IS POWER

प्रकृति समर्पित...

Ratnank

रत्नांक

महाविद्यालय पत्रिका

चतुर्थ अंक : मार्च 2020

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज, किशनगढ़

संरक्षक : CA सुभाष अग्रवाल

परामर्श : डॉ. वन्दना भटनागर,
डॉ. शैलेन्द्र पाटनी

सम्पादक : डॉ. हुकम सिंह चम्पावत

टंकण : नेहा शर्मा

मुद्रण एवं वितरण : अमित दाधीच,
राजेश जैन

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज
अजमेर रोड़, मदनगंज-किशनगढ़,
अजमेर (राजस्थान) 305801
दूरभाष : 01463-307000
ई-मेल : info@rkgirlscollege.edu.in

विषय	पृष्ठ
रत्नांक	2
अध्यक्ष संदेश	3
सचिव संदेश	4
प्राचार्य संदेश	5
सम्पादकीय	6
एक नई कार	7
नियति	8
The Importance of Planets	9
वैश्विक महामारी कोविड-19 के समाधान के प्रति हमारे उत्तरदायित्व	10
भारतीय संस्कृति एवं समग्र संसार	11-12
ईश्वरीय स्वरूप है : प्रकृति	13
प्रकृति की गोद	13
भूतल, सम्पत्ति, धरती, आँचल	14
राजनीतिक चिंतन में प्रकृतिवाद की अवधारणा	15
वक्त	16
अंतर्निर्भरता की दृष्टि से प्रकृति और समाज	17
सुगम जीवन प्रदाता : हमारी प्रकृति	18
पेड़, वर्तमान में प्रकृति का स्वरूप	19
कॉलेज के वे दिन	19
पशुओं के लिए वरदान : अजोला पादप	20
प्रकृति चिंतन, बदलती प्रकृति	21
पिता, मेहनत	22
हरण, मानव	23
तकनीक का अनुकूलतम उपयोग एवं पर्यावरण संरक्षण	24
रूद्राक्ष	25
लुप्तप्राय प्रजातियाँ : एक चिंतन	26
विद्यार्थी जीवन में गीता का महत्व	27
संकट, रंग हजार	27
वर्तमान शिक्षा में नवाचार प्रयोग आवश्यक	28
भारतीय राष्ट्रीय आभासी ग्रंथालय : एक परिचय	29
प्रकृति की गोद में प्राचीन जल प्रबंधन	30
पर्यावरण को सकारात्मकता प्रदान करता लॉकडॉउन	31
प्रकृति विराट मैं तुच्छ	32
माँ स्वरूप पृथ्वी : एक चिंतन	33

एक शिक्षा स्वप्न

शिक्षा से जब कदम बढ़ेंगे, श्रेष्ठ बनेगा देश
बेटी हो या बेटा हो, मेरा यह सन्देश !

विशाल हृदयी, सक्षमता की प्रतिमूर्ति पूज्य 'बाबासा' का शिक्षा से जुड़ा एक ऐसा स्वप्न जिसे वे अन्तर्मन से छूकर कहते थे कि इस शहर के आस–पास की निवासित समस्त बालिकाओं में शिक्षा की अलख जगाने हेतु एक ऐसा महिला शैक्षणिक केन्द्र हो जिसमें वे अपने भविष्य को निखारकर आत्मनिर्भर बन सके। वे महान व्यक्तित्त्व जिन्होंने अपने दीर्घ एवं गहन अनुभव से यह महसूस किया कि यदि घर की एक कन्या पढ़ेगी तो अनेक पीढ़ीयाँ शिक्षित होंगी तथा वे कहीं दबेगी नहीं, हारेगी नहीं, स्वयं को सफल, सक्षम बनाये हुए एक नव समाज की स्थापना करेंगी।

उनके इसी दिव्य स्वप्न को साकार करने का पवित्र कर्त्तव्य उनके परिजनों ने पूर्ण करते हुए किशनगढ़ क्षेत्र को अत्याधुनिक शिक्षा से जुड़ा एक ऐसा शिक्षण संस्थान समर्पित किया जिसे देखते ही लगता है मानो सरस्वती वाणी को ऊर्जस्वित करता ऐसा अद्‌भुत, अनुपम, अद्वितीय शैक्षिक संस्थान पहले नहीं देखा ! इन पावन व उच्च विचारों के धनी 'बाबासा' एवं उनके परिवारजनों की शोभा जितने भी शब्दों में की जाए वहाँ शब्दों की अल्पता प्रतीत होने लगती है।

पूज्य 'बाबासा' को कोटि–कोटि नमन !

''रत्नांक''

''रत्नांक'' शब्द दो शब्दों यथा 'रत्न + अंक' शब्द से मिलकर बना है, जिसमें 'रत्न' से आशय धरती से प्राप्त बहुमूल्य खनिज पदार्थों से माना जाता है, जिसका सामान्य अर्थ प्रसिद्ध चमकीले खनिज पदार्थ हीरे, मणि, नगीना या जवाहारात से लिया जाता है। इसका विशिष्ट व महत्वपूर्ण अर्थ 'सर्वश्रेष्ठ' है।

इसमें दूसरा शब्द अंक है जिसका अर्थ संख्या, गोद, चिन्ह् व भाग्य माना जाता है। अतः 'रत्नांक' शब्द से आशय 'रतन के लिए अंक' या 'रतन की गोद में' से लिया जा सकता है। यहाँ 'रत्नांक' शब्द इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि हमारा पूरा समूह परम आदणीय श्री रतनलाल जी एवं उनके आत्मज कंवरलाल जी से ही पल्लवित है। ''रत्नांक'' शब्द में दो वर्णों यथा 'र' व 'क' की अपनी एक विशिष्ट महता प्रतिपादित है इस शब्द में अग्र वर्ण 'र' पूजनीय श्री रतनलाल जी का स्मरण कराता है तथा शब्द का अन्तिम व पश्च वर्ण 'क' परम आदरणीय श्री कंवरलाल जी को पुष्ट करता है साथ ही ये वर्ण हमारे महाविद्यालय के नाम को भी चरितार्थ करते हुए प्रतीत होते हैं।

इस शब्द के सामासिक स्वरूप से अर्थ को समझा जाये तो प्रथम अर्थ रतन के लिए अंक एवं द्वितीय अर्थ रतन के अंक में अर्थात् रतन की गोद में से माना जा सकता है। जिसका अर्थ परम पूज्य बाबासाहेब श्री रतनलाल जी को समर्पित प्रकाशित पत्र से है तथा दूसरा अर्थ पूजनीय बाबासाहेब की गोद में पल्लवित व पुष्पित समूह के सम्बन्ध में माना जा सकता है। महाविद्यालयी पत्रिका के सम्बन्ध में हमारा यह प्रयास है कि चतुर्थ अंक के रूप में प्रकाशित यह महाविद्यालयी पत्रिका ज्ञान की आभा को प्रकाशित करते हुए परमपूज्य बाबासाहेब एवं परम आदरणीय श्री कंवरलाल जी सहित प्रकृति को समर्पित है। अतः इस पत्रिका का नाम 'रत्नांक' रखना हमारे महाविद्यालय ही नहीं अपितु सम्पूर्ण आर. के. समूह के लिए गौरव की बात है।

संपादक

संदेश

प्रकृति में जड़ का पर्याय 'मूल' माना गया है। 'मूल' वह है जिससे प्रकृति अपने निश्चित स्वरूप में रंग बिखेरती है। एक 'मूल' धरती की नमी, तपन, अंधेरे, कठोरता को सहन कर स्वयं को अपने जीवन जल तक पहुँचाती है तब जाकर अंकुरण सूर्य की किरणें देखता है। जड़ तत्त्व तब तक चलता रहता है जब तक वह प्रकृति को सम्पूर्णता प्रदान नहीं कर दे, अर्थात् मनुष्य को एक प्रेरणा प्रकृति में संचरित 'मूल' से भी लेनी चाहिए कि मूल तब तक कठोरता व अंधेरे को चीरती रहती है जब तक वह लक्ष्य तक नहीं पहुँच जाती या यूँ कहे कि मनुष्य को कभी संघर्षों से थकना नहीं चाहिए जब तक की वह अपनी निर्धारित मंजिल तक न पहुँच जाये। मुझे पूर्ण विश्वास है प्रकृति के इस 'मूल' स्वरूप से हम अवश्य ही प्रेरणा लेकर आगे बढ़ते चले जायेंगे व सफलता हमारा जीवन जल होगा।

प्रकृति प्रेरित व संदर्भित महाविद्यालय पत्रिका 'रत्नांक' के चतुर्थ नवीन अंक की मैं संपादक एवं सम्पूर्ण संपादन मण्डल को असीमित, अशेष बधाई व शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

इन्हीं मंगलकामनाओं सहित।

अशोक पाटनी
अध्यक्ष

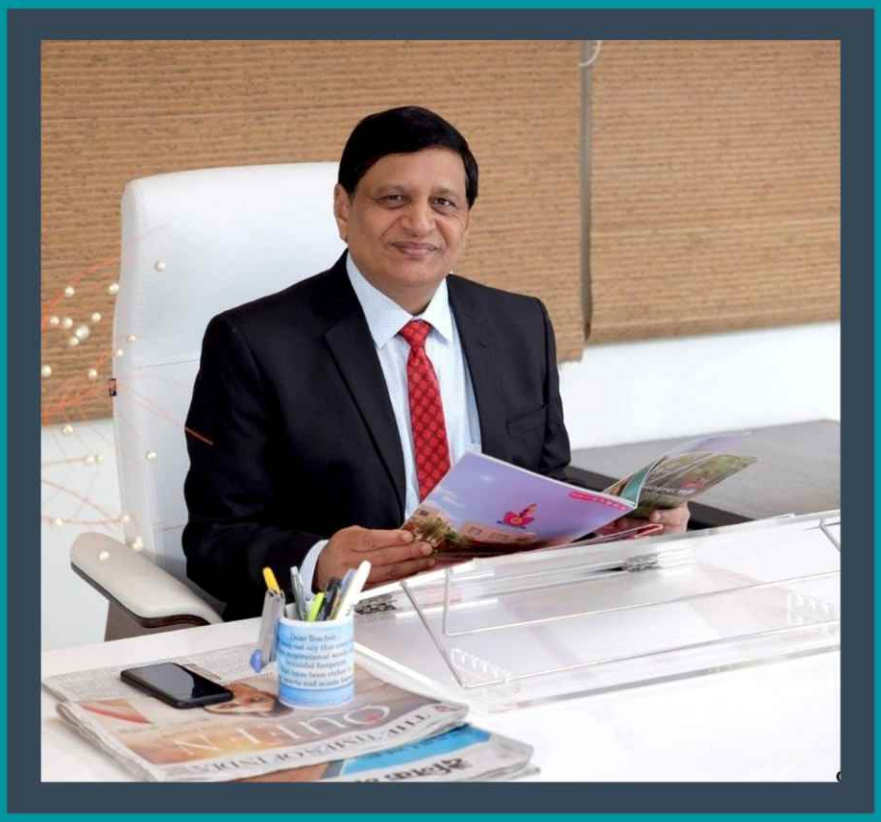

संदेश

धरती, जल, वायु, अग्नि व आकाश समस्त तत्त्व जीवन प्रदायिनी शक्तियाँ हैं। इनके बिना जीव क्या, जीवन क्या! जब भी अक्षुओं से प्रज्ञा व प्रज्ञा से मन तक यह बात पहुँचती है कि प्रकृति में शाखाऐं फैलाये वृक्ष हमें कितनी प्राण वायु प्रदान करते हैं तब मन व मस्तिष्क निरूत्तर सा हो जाता है क्योंकि उसके पास इसका कोई निश्चित मापदण्ड नहीं होता। एक वृक्षीय मूल ही उसे ऐसा अटल खड़ा करती है जिससे वह तना, शाखा, पत्तों व पुष्पों तक की यात्रा पूर्ण कर चहुँओर खुशियों की महक बिखेरने में सफलता अर्जित करता है। एक वृक्ष सदैव हमारे लिए प्रेरक है। इसका मूल संघर्ष, तना अटलता, शाखाऐं प्रगति, पत्ते स्वागत व फूल प्रसन्नता के प्रतीक हैं। हमें इनसे प्रेरणा लेकर, नव सीख के साथ इनके संरक्षण का दायित्व निभाना चाहिए।

हमारा विश्वास है महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित प्रकृति आधारित 'रत्नांक' पत्रिका का यह नवीन अंक समस्त पाठकों, प्रबुद्धजनों व प्रकृति प्रेमियों के लिए नव उत्साह का संचार करेंगी। इस हेतु मैं सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार को असीम, अनंत बधाई व शुभकामनाएं देता हूँ।

सी.ए. सुभाष अग्रवाल
सचिव

संदेश

प्रकृति प्रदत्त पुष्प विविध रंगों व सुगंधों का प्रसन्नतासूचक प्रतिफलित गुलदस्ता है। एक सी पृथ्वी, एक सा जल, एक सा पर्यावरण फिर भी धरती के हर कदम पर अलग रंग, अलग खुशबू, अलग आकृति सब कुछ देखकर मन प्रफुल्लित सा होने लगता है। पुष्प आधारित इन्हीं शब्दों को आत्मसात करते हुए वर्तमान के विद्यार्थियों को संदेश है कि हमें स्वयं के सामर्थ्यानुसार स्वयं की पहचान कर अपना लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए जिससे हमें श्रेष्ठतम सफलता का अर्जन हो सके। प्रसन्नता से युक्त पुष्पों से सुगंधित समाज की संकल्पना तभी सार्थक है जब हम समाज हेतु कुछ नवाचार कर समाज को एक नई दिशा प्रदान कर उसे आगे बढ़ाऐं।

इस सम्बन्ध में हमारा विचार है कि यदि हम प्रकृति के इन रंगों को बचाने व बसाने का पुनीत कार्य करेंगे तो अवश्य ही उन्हें प्रतीक मान नवसीख की स्थापना करते हुए सफलता अर्जित करेंगे। इन्हीं विचारों को पुष्ट करती महाविद्यालय पत्रिका 'रत्नांक' की, मैं सम्पूर्ण शब्द संरचनात्मक विद्वजनों की प्रशंसा करते हुए असीम अशेष बधाई व शुभकामनाएं देती हूँ।

डॉ. वन्दना भटनागर
प्राचार्य

सम्पादकीय

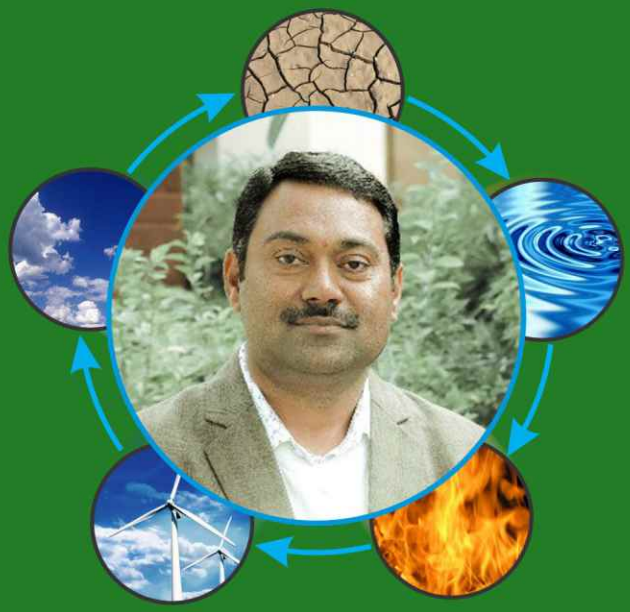

एक ही धरती, एक ही आकाश, एक ही प्रकाश फिर भी प्रकृति के अपने विविध रंग हैं। प्रकृति ने हमें सर्दी, गर्मी, वर्षा, बसंत, पतझड़, पहाड़, झरने, पेड़–पौधे, फूल–पत्तियाँ आदि कितना सब कुछ दिया है। ज़रा सोचिये यही प्रदात्री प्रकृति यदि अपना स्वरूप बदलकर विपरीत चलने लग जाये तब हमारा क्या होगा? तब उत्तर यही आता है कि हम नश्वर है शीघ्र ही नष्ट होने की ओर आगे बढ़ेंगे। परंतु यह सत्य भी है कि इसके जिम्मेदार भी शायद हम ही रहेंगे क्योंकि हम इसके संरक्षण के प्रति इतने सजग नहीं जितना होना चाहिए। आईये हम पृथ्वी के इन्हीं पंचतत्व, पंचमहाभूतों के माध्यम से इसे समझने की कोशिश करें।

'पृथ्वी' माँ स्वरूपा होती है। इसकी गोद में समस्त जीवों का लालन, पालन व पोषण होता है। पृथ्वी न होती तो शायद हमारा अस्तित्व ही न होता। इसी पृथ्वी से जीव जंतु, पशु–पक्षी, मानव व प्रकृति सुशोभित है। हमें सदैव प्राचीन ग्रंथों में दी गई महत्ता को समझते हुए इसका पूजन करना चाहिए। परंतु अब हम पृथ्वी को हमारी आवश्यकता पूर्ति का साधन मात्र मानते हैं जो हमारे लिए उपयुक्त नहीं है। कभी–कभी थोड़ा विचार करें यह पृथ्वी व भू है तब तक तो ठीक है पर भू के साथ कम्प जोड़ दिया, तब भूकम्प बनेगा जो हमसे सहा नहीं जायेगा एवं गुजरात के कच्छ भुज में आये भूकम्प की याद दिलायेगा जिसमें अनेक जीव, मनुष्य, भवन, संसाधन सब कुछ पृथ्वी में समा गये रहा तो बस रूदन, क्रंदन, पीड़ा संवेदनाएं व दु:ख जिन्हें आज तक हम नहीं भूला पाये। साथ ही भूस्खलन व ज्वालामुखी भी पृथ्वी पर आने वाली विपदाएं हैं जिन्हें हमें गंभीरता से लेते हुए विचार करना चाहिए।

'जल' ही जीवन है। यह उक्ति भले ही छोटी लगे पर जीवन के दर्शन से अल्प नहीं। विचारें यदि पृथ्वी पर फैले विशाल रेगिस्तान में बिना जल विचरण करना पड़े तो क्या होगा? होंठ से हलक तक सब कुछ शुष्क होकर इंद्रियाँ जवाब देने लग जायेंगी जो मृत्यु से कम नहीं होगा। यही जल जब अल्पता से अधिकता की ओर बढ़ता है तो ज़लज़ला बन जाता है जिसमें इंसान तो क्या उसकी चपेट में आने वाली हर वस्तु उसमें समाहित होकर विलुप्त सी होने लगती है जिसका उदाहरण उत्तराखंड के केदारनाथ में आया ज़लज़ला है जो सबको लील गया पता ही नहीं कितना ही सबकुछ कहाँ चला गया। जब भी जल अल्प हो या अति हो कुछ विनाश होता अवश्य है। हमें 'जल' के संदर्भ में भी चिंतन अवश्य करना चाहिए।

'अग्नि' आग, अनल तक उचित है परंतु यही अनल जब दावानल में तब्दील हो जाये तो विनाश निश्चित है क्योंकि इसकी एक चिंगारी घर को रोशन भी कर सकती है और ख़ाक भी। यह आपको तय करना है कि इसको संजोने, उपयोगी व अनुपयोगी कैसे बनाना है। हमने कुछ दिनों पूर्व पढ़ा, सुना व देखा ही था कि ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में आग लगी थी जिसने जीवों को दौड़ाते–दौड़ाते ही अपने आक्रोशित रूप से आगोश में ले लिया जिससे जीवों के शरीर भस्म होकर अवशेष मात्र रह गये थे। यह प्रकृति का कोप ही है जिसका सामना केवल ऑस्ट्रेलिया कानन को ही नहीं सम्पूर्ण जीव जगत को भोगना पड़ा था। अत: अग्नि तत्त्व की महत्ता को समझते हुए प्रकृति से तादात्म्य बिठाना चाहिए।

'वायु' को प्राण की संज्ञा दी गई है। इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य में प्राण तब तक ही है जब तक की इस सृष्टि में वायु है। यदि वायु नहीं तो कुछ नहीं। कभी–कभी विचार आता है कि यदि वायु नहीं होती या अत्यधिक प्रदूषित होती तो क्या होता? उस समय सर्व निरूतर सा हो जाता है। यही वायु प्राणवायु है तब तक ठीक है पर यही वायु अगर तूफान यथा उड़ीया का फैनी, जापान का टाईफून बन जाये तो प्रकृति में विनाश निश्चित है। साथ ही पृथ्वी पर विचरित जीव सूखे पत्तों की तरह निर्जीव सा लक्ष्यहीन यात्रा करता रहेगा जिसका लाभ कुछ नहीं। प्रकृति में बढ़ते वायु प्रदूषण को कम करने का प्रयास ही प्रकृति को सच्चा समर्पण है।

'आकाश' अनंत है। इस अनंतता में मानव जीवन के अनंत रहस्य है जिससे मानव जीवन संचरित है। आज के बढ़ते प्रदूषण ने आकाश को प्रदूषित तो किया है साथ ही मनुष्य इस अनंत की खोज हेतु हमेशा प्रयत्नशील से है उससे भी इसे नुकसान हो रहा है जिसका प्रमाण 'ब्लैक हाल', ओजोन छिद्र है जिससे पराबैंगनी किरणें धरती की सतह तक पहुँच रही है इससे मानव जीवन को खतरा तो बढ़ ही रहा है। आकाश की अनंतता बनी रहे इस दिशा में भी हमें अवश्य सोचना चाहिए। प्रकृति का प्रकोप तो हम वर्तमान में देख ही रहें है कि एक छोटा सा कोरोना वायरस पूरी दुनिया को घर बैठाकर खुद आज़ादी से घूम रहा है। हमारा विश्वास है कि प्रकृति को समर्पित 'रत्नांक' का यह अंक अवश्य ही पाठकों को पुन: प्रकृति हेतु पुनीत संरक्षणीय सोच को विकसित करने में सफलता हासिल करेगा।

डॉ. हुकम सिंह चम्पावत
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग

एक नई कार

एक बार एक कार निर्माता कम्पनी के एक इंजीनियर ने एक विश्व स्तरीय कार डिज़ाईन की। कम्पनी के सी.ई.ओ. डिज़ाईन से अत्यधिक प्रभावित हुए और डिज़ाईन की बहुत प्रशंसा की। जब कार को वर्कशॉप से शोरूम तक ले जाने का समय आया तो पता चला की कार की ऊँचाई दरवाजे से कुछ इंच अधिक है। अतः कार को दरवाजे से बाहर नहीं ले जाया जा सकता है। यह जानकर इंजीनियर बहुत निराश हुआ, कि उसने कार बनाते समय इस पर ध्यान क्यों नहीं दिया। अब सी.ई.ओ. सहित सभी सोचने लगे कि कार को बाहर कैसे ले जाया जाये? इंजीनियर ने सलाह दी कि दरवाजे को तोड़कर ही कार बाहर निकाली जा सकती है। इस पर पेंटर का मत था कि यदि कार इस दरवाजे से बाहर जायेगी तो कार का रंग–रोगन खराब हो सकता है, कार को खरोंचे आ सकती हैं। अन्य कर्मचारियों ने भी अपनी–अपनी सलाह दी लेकिन सी.ई.ओ. किसी की भी सलाह से सहमत नहीं हुआ, उसका कहना था कि नई शुरूआत में तोड़–फोड़ जैसी कार्यवाही अशुभ रहेगी।

एक चौकीदार दूर बैठकर सारा घटनाक्रम देख रहा था। कुछ हिम्मत जुटाकर वह सी.ई.ओ. के पास पहुँचा और सी.ई.ओ. से बोला कि उसके पास एक उपाय है जिससे बिना तोड़–फोड़ के कार सही–सलामत वर्कशॉप से बाहर निकाली जा सकती है। इंजीनियर तथा अन्य सभी उपस्थित कर्मचारी इस बात पर जोर से हँस पड़े, बोले कि जिस समस्या का हल इतने बुद्धिमान लोगों के पास नहीं है उसका हल एक चौकीदार कैसे निकाल सकता है ?

सी.ई.ओ. ने चौकीदार की बात पर ध्यान दिया, उससे कहा तुम उपाय बताओ। चौकीदार ने कहा श्रीमान कार की जितनी ऊँचाई दरवाजे से अधिक है, यदि कार के पहियों में से उतनी हवा कम कर दी जाये तो कार आसानी से बाहर जा सकती है। चौकीदार का सुझाव सुनकर यकायक सभी स्तब्ध रह गये, फिर ताली बजाकर चौकीदार की बहुत प्रशंसा की। अब कार बिना किसी नुकसान से वर्कशॉप से कुशल बाहर आ गई थी। सी.ई.ओ. ने सभी कर्मचारियों को सुझाव दिया की हमेशा केवल विशेषज्ञ के दृष्टिकोण से समस्याओं का विश्लेषण न करें।

इस लघु कहानी की तरह ही हमारे जीवन में भी अनेक समस्याऐं होती हैं। कार में से निकाली गई हवा, जीवन में हमारा क्रोध, निराशा, अहंकार हो सकते हैं, जिन्हें बाहर करने पर सरलता से लक्ष्य को पाया जा सकता है।

सी.ए. सुभाष अग्रवाल
सचिव

नियति

जंगल में एक गर्भवती हिरनी बच्चे को जन्म देने को थी। वह एकांत स्थान की तलाश में घूम रही थी कि उसे नदी किनारे ऊँची और घनी घास दिखाई दी। उसे वह उपयुक्त स्थान लगा शिशु को जन्म देने के लिए, वहाँ पहुँचते ही उसे प्रसव पीड़ा शुरू हो गयी। उसी समय आसमान में घनघोर बादल वर्षा को आतुर हो उठे और बिजली कड़कने लगी। उसने दाँऐं देखा तो एक शिकारी तीर का निशाना उसकी तरफ साध रहा था। घबराकर वह दाहिने मुड़ी, तो वहाँ एक भूखा शेर झपटने को तैयार बैठा था। सामने ही सूखी घास आग पकड़ चुकी थी और पीछे मुड़ी तो नदी में जल अधिक था।

मादा हिरनी क्या करती? वह प्रसव पीड़ा से व्याकुल थी। अब क्या होगा? क्या हिरनी जीवित बचेगी? क्या वो अपने शिशु को जन्म दे पायेगी? क्या वह शिशु जीवित रहेगा? जंगल की आग सब कुछ जला देगी? क्या हिरनी शिकारी के तीर से बच पाएगी? क्या हिरनी भूखे शेर का भोजन बनेगी? वह एक तरफ आग से घिरी है और पीछे नदी है! अब क्या करेगी वह? मन स्वयं से प्रश्न करने लगा।

हिरनी अपने आप को शून्य में छोड़, अपने बच्चे को जन्म देने में लग गयी। कुदरत का करिश्मा देखिए। बिजली चमकी और तीर छोड़ते हुए शिकारी की आँखें चौंधिया गयी। उसका तीर हिरनी के पास से गुजरते हुए शेर की आँख में जा लगा, शेर दहाड़ता हुआ इधर–उधर भागने लगा और शिकारी शेर को घायल जानकर भाग गया। घनघोर बारिश शुरू हो गयी और जंगल की आग भी बुझ गयी। हिरनी ने सकुशल अपने शिशु को जन्म दिया।

इससे यह तय होता है कि हमारे जीवन में भी कभी–कभी कुछ क्षण ऐसे आते हैं, जब हम चारों तरफ से समस्याओं के अधीन हो जाते हैं और कोई निर्णय नहीं ले पाते। तब हमें सब कुछ नियति के हाथों सौंपकर अपने उत्तरदायित्व व प्राथमिकता पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। अन्ततः हार, जीत, यश, अपयश, जीवन, मृत्यु का अन्तिम निर्णय ईश्वर ही करता है। हमें उस पर विश्वास रखते हुए उसके निर्णय का सम्मान करना चाहिए।

जयश्री अग्रवाल
सदस्य, प्रबन्ध समिति

The Importance of Planets

It is interesting to know how the various planets in the universe are linked to number of different systems within the physical body and govern health and life of human organs.

Given below is a summary of twelve major planets & their linkages:

1. **Sun** governs right eye of man, left eye of man, left eye of women, brain, bones, stomach, diabetes, abdomen, heart disease, tuberculosis and lungs.
2. **Moon** governs breast, ovaries, bladder, blood circulation, kidneys & heart.
3. **Mars** governs muscular system, left ear, face, head, pelvis, kidney, prostate gland, brain, rectum, testis, red bone marrow, sex organ, tumor, piles fistula, ulcer, chicken pox, cuts & blood pressure.
4. **Mercury** governs skin, nose, asthma, gall bladder, chicken pox, epilepsy & nerve disorders.
5. **Jupiter** governs liver, blood circulation in arteries, fat, kidneys & ears.
6. **Venus** eyes, generative system, throat, chin, cheeks, kidney, semen, venereal disease, cholera etc.
7. **Saturn** governs bones, teeth, gastric, hair, nerves, muscles, TB of bones & colic.
8. **Rahu** governs spleen, breathing process, leprosy & cancer.
9. **Ketu** governs bowels, colic, high fever & mysterious diseases.
10. **Harshal** governsnerves, fluids, brain cells, spinal cord and aura etc.
11. **Neptune** governs telegraphic functions, motor and sensory nerves.
12. **Plato** governs manipulating tendencies, negative impulses, urges & desires.

Dr. Vandana Bhatnagar
Principal

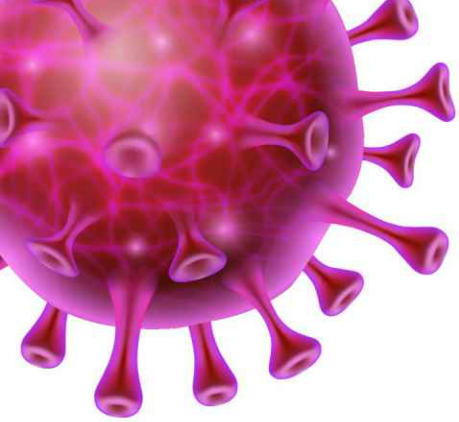

वैश्विक महामारी कोविड-19 के समाधान के प्रति हमारे उत्तरदायित्व

कोरोना वायरस कई प्रकार के विषाणुओं का एक समूह होता है जिससे मनुष्य के श्वसन तन्त्र में संक्रमण से शरीर पर सामान्य और अति गम्भीर प्रभाव हो सकते हैं। वस्तुतः इसके प्रभाव को समाप्त करने के लिए वैक्सीन की अनुपलब्धता के कारण स्वयं की प्रतिरक्षा प्रणाली पर निर्भरता ही उपचार के लिए एक मात्र उपयुक्त विकल्प दिखायी देता है।

चीन के वुहान शहर से फैले नोवेल कोरोना वायरस जिसे विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोविड–19 नाम दिया है, ने वैश्विक महामारी के रूप में विश्व के कई देशों को प्रभावित किया है। इसके लक्षणों में तेज बुखार, कफ़ व सूखी खाँसी, साँस लेने में समस्या, फ्लू अथवा ठण्ड, उल्टी, दस्त तथा सूंघने व स्वाद की क्षमता की कमी आदि प्रमुख है। कई नवीन शोध यह भी सत्यापित करते हैं कि इसके लक्षणों में लगातार विविधता और बदलाव दिखायी देती है जो कि चिन्ता और चुनौती का विषय है।

इस वैश्विक महामारी ने विश्व के कई देशों को प्रभावित किया है और ऐसा लगता है जैसे दुनिया स्थिर सी हो गयी है, आम जन–जीवन प्रभावित है, वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी इसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। अतः इस महामारी के समाधान खोजना न केवल संक्रमण की समाप्ति के लिए आवश्यक है बल्कि विश्व के कई देशों के हालात को सामान्य करने के लिए भी जरूरी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार सामाजिक दूरी का पालन करना ही इस संकट से उबरने का प्रारम्भिक समाधान है ताकि कोविड–19 के संक्रमण की कड़ी को तोड़कर इसके प्रभाव को कम किया जा सके। इसके साथ ही स्वच्छता का पालन और आवश्यक कृत्रिम साधनों का उपयोग कर हम इस महामारी के नियंत्रण की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

यह सत्य है कि इस महामारी के कारण उत्पन्न बदलती परिस्थितियों ने हमारी जीवनी शैली को अत्यधिक प्रभावित किया है। निःसंदेह हमें इन बदलती परिस्थितियों में अपनी जीवन शैली और उसी अनुसार अपनी आदतों में भी बदलाव कर लेना चाहिए और दूसरों को भी इस प्रकार के बदलावों के लिए सतर्क करना चाहिए। इसके लिए हमें स्वास्थ्य और स्वच्छता का ध्यान रखने को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लेना चाहिए।

इस महामारी के समाधान के लिए सरकार द्वारा लगातार विविध माध्यमों से आम लोगों को इसके लक्षण और सावधानियों से अवगत कराया जा रहा है। हमारा यह दायित्व है कि सरकार के दिशा निर्देशों का गम्भीरता से पालन किया जाए ताकि देश इस वैश्विक महामारी के संकट से उबर सके। इसके लिए "नियमों की पालना ही सच्ची राष्ट्र भक्ति" को ही हमे अपने उत्तरदायित्वपूर्ण जीवन का ध्येय वाक्य बना लेना चाहिए। इस दौरान हमारी सुरक्षा के लिए प्रयासरत उन कोरोना वॉरियर्स का भी हमे हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करना चाहिए जो अपने जीवन की परवाह ना करते हुए राष्ट्र हित में अपनी जिम्मेदारियों का लगातार निर्वहन कर रहे हैं।

इससे यह बात भी सार्थक हो जाती है कि प्रकृति सर्वशक्तिमान है और इसीलिए प्रकृति केन्द्रित इस अंक के माध्यम से हमें इस बात का प्रण लेना चाहिए कि हमारे प्रयास सदैव प्रकृति के अनुकूल ही होने चाहिए ताकि हम स्वयं को और देश को सुरक्षित रखने में अपना अभूतपूर्व योगदान दे सकें।

डॉ. शैलेन्द्र पाटनी
उप प्राचार्य

भारतीय संस्कृति एवं समग्र संसार

भारत सदैव अपनी नमस्ते संस्कृति का प्रवाहक रहा है। अचानक ऐसा क्या हुआ की दुनिया भी सबसे नमस्कार और नमस्ते कहने लगी। वर्तमान विश्वशक्ति अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और आयरलैंड के प्रधानमंत्री लियो वराडकर ने एक दूसरे से नमस्ते कहकर एक दूसरे का अभिवादन किया, इज़राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने नमस्ते को अपनाया, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैंक्रों लोगों से नमस्ते कर रहे हैं ऐसे और भी बहुत गणमान्य सदस्य हैं। इससे यह तय है कि भारत विश्वशक्ति की ओर अग्रसर है। भारत की चहुँ दिशाओं में व्याप्त विविध संस्कृति जिसमें इतना आदर, सम्मान, विनम्रता और अपनापन है जो एक दूसरे को अपनी ओर खींचती है। विश्व की प्राचीनतम संस्कृति जहाँ वैद, पुराण, उपनिषद, भाष्य, महाकाव्य इत्यादि ऋषियों द्वारा लिखे गए, जिनमें ज्ञान, विज्ञान, गणित, खगोल, वाणिज्य, कला आदि के गूढ़ रहस्य किसी डी. एन.ए. की जीन अनुक्रम की भाँति पहले ही पैक किये जा चुके हैं। इन रहस्यों को आज भी कई वैज्ञानिक डी.एन.ए. से आर.एन. ए. में अनुलेखित करने में लगे हैं ताकि उनसे जीवन के सभी अनछुए पहलुओं से पर्दा उठ सके।

आज दुनिया की क्या दशा हो रही है और यह जगत को भविष्य में किस दिशा में ले जाएगी, नहीं कहा जा सकता। नग्न आँखों और सामान्य सूक्ष्मदर्शी से न दिखने वाले विषाणु ने दुनिया को घरों में कैद कर दिया है। कोरोना वायरस जो पहले से विद्यमान था, अपने नए रूप में प्रकट हुआ है वह अपनी विलक्षण प्रतिभा दिखाते हुए केमेलीओन की तरह अपना रंग–रूप बदल रहा है। आज यह विश्व गोले के कितने लोगों को कालग्रसित कर चुका है एवं हमारे सामने है। सभी देश इससे बचने के उपाय ढूँढ रहे हैं लेकिन प्रतिदिन कई परिवार अपने संक्रमित सगे को देख भी नहीं पा रहे, यहाँ तक की अपने किसी के दुनिया से चले जाने के बाद उसके अंतिम दर्शन और दूसरे संस्कार भी नहीं कर पा रहे हैं। समस्त देश अत्यानुधिकता की अंधी दौड़ में एक दूसरे से प्रकृति की परवाह किये बगेर आगे बढ़ने की होड़ में लगे हुए हैं, लेकिन प्रकृति से छेड़छाड़ करने वालों को प्रकृति कभी नहीं छोड़ती कुछ उदाहरण दे रहा हूँ, अमेज़न और ऑस्ट्रेलिया के जंगलों की भीषण आग, बड़े भूकम्पों की संख्या 2010 के बाद अचानक बढ़ गयी है। नेपाल का भूकंप सभी के सामने है, साइक्लोन, बाढ़, बुश फायर, ग्लेशियर का पिघलना, अत्यधिक भूमि दोहन इत्यादी ऐसी आपदाएं है जिससे हम जूझ रहे हैं। ऐसा न हो की भविष्य में पृथ्वी का भूगोल पुन: लिखने की जरुरत आन पड़े।

व्हाइट हाउस का नाम तो सभी ने सुना ही होगा। ये हाऊस सामाजिक पटल पर बहुत कम का अनुसरण करता है, लेकिन उसने भी आज भारत के प्रधानमंत्री और पीएमओ का अनुसरण कर रखा है। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। इसके पीछे भारत की इस महामारी से निपटने की रणनीति का अनुसरण करते हुए उसे अपने देश में भी लागू करना है। हमारा देश, सभी देशों की कोरोना महामारी से निपटने में सहायता कर रहा है और उन्हें हाइड्रोक्सी क्लोरोक्विन का निर्यात कर रहा है जो इस बीमारी में सबसे ज्यादा कारगर सिद्ध हुई है।

भारत ने दुनिया को बहुत कुछ दिया, जिसमे शून्य भी शामिल है, जिसकी महत्ता सभी जानते हैं। देश का कोई भी धर्म हो, उसकी संस्कृति ही उसकी पहचान होती है। भारत आज योग गुरु बन गया है जिसने दुनिया में योग की महत्ता समझायी है एवं दुनिया का बड़ा हिस्सा इसे अंगीकार कर चुका है क्योंकि योग हमारी आज की नहीं, वर्षों पुरानी क्रिया है जो पतंजलि और अनेक ऋषियों ने दी थी। योग करने से शरीर की सभी व्याधियां दूर हो जाती है, यहाँ तक की कैंसर नामक बीमारी भी। योग करते समय

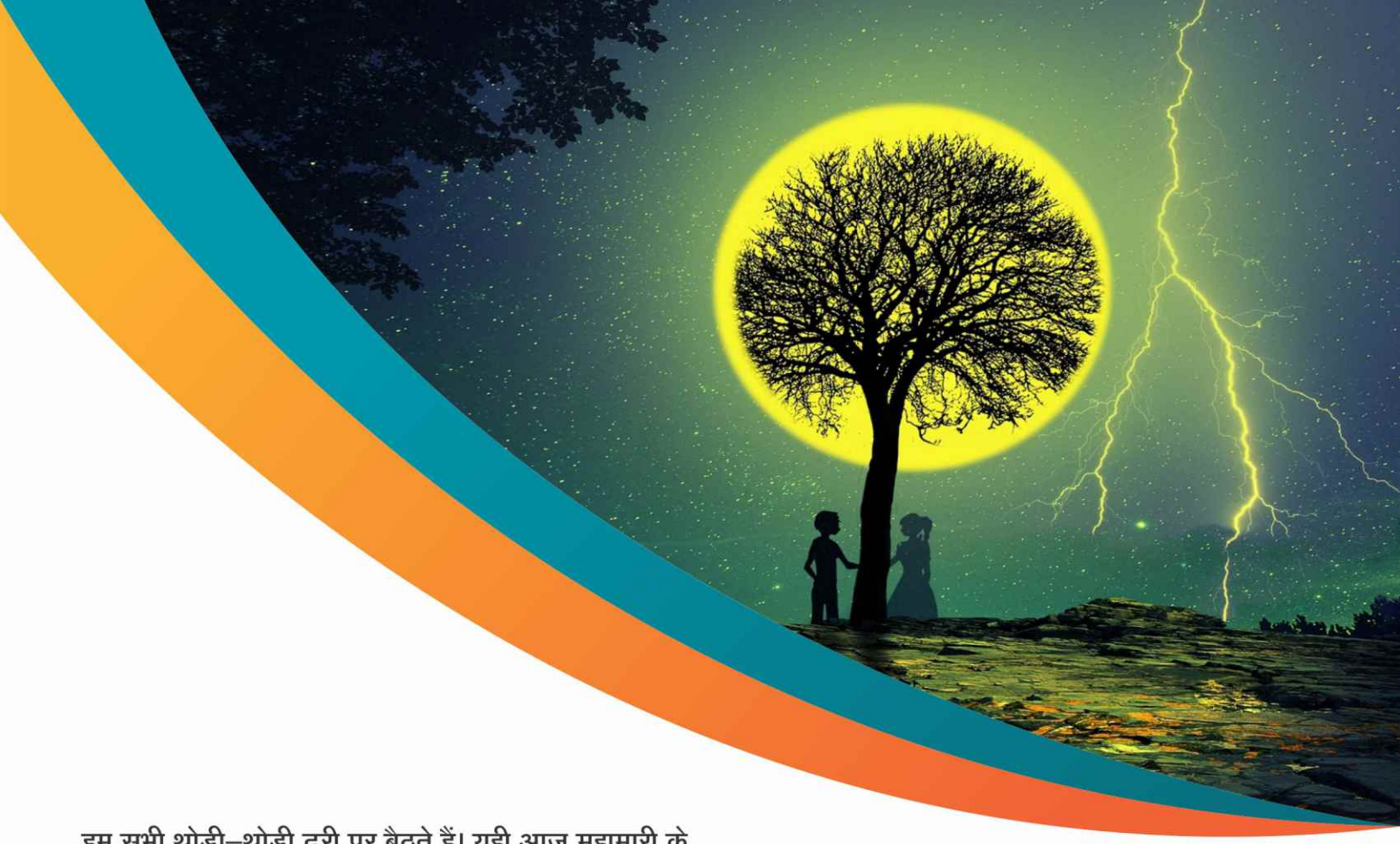

हम सभी थोड़ी–थोड़ी दूरी पर बैठते हैं। यही आज महामारी के समय की सामाजिक दूरी है। यानि इस दूरी का ज्ञान हमें वर्षों पहले से है। आयुर्वेद ने सभी को अपनी और आकर्षित किया है क्योंकि इसके कोई दूसरे दुष्प्रभाव नहीं होते और ये शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। आज सभी को आयुर्वेदिक काढ़ा पिलाया जा रहा है ताकि शरीर वायरस के प्रभाव को कम कर सके। तुलसी, नीम, नीम गिलोय, अश्वगंधा, हर्डे, हल्दी, आँवला इत्यादी आयुर्वेद के तत्त्वों को भारत से ज्यादा कौन जान सकता है जिनके अनेक औषधीय गुण हैं, इन सभी के उपयोग से आज भारतीय अपनी प्रतिरोधक क्षमता में दूसरे देशों से कहीं आगे है।

राम कृष्ण की इस धरा पर आस्था का वो सागर है जिसमे दुनियां गोते लगाने को आतुर है। सब जान चुके हैं कि हिंसा करके कोई ज्यादा समय तक टिक नहीं सकता। भारत सदैव भगवान महावीर के अहिंसा के सिद्धांतों पर चला आया है, जिसमे मुँह पर मुँहपत्ति (सफ़ेद कपड़ा) इसलिए पहना जाता है कि कहीं मुँह की गर्म वायु से कोई जीव मर न जाये। आज मुँह पर मास्क लगाना तो भगवान महावीर के समय से हमारे यहाँ चला आ रहा है, यानि मास्क लगाना दुनिया को जैन धर्म ने ही सिखाया है। भगवान् बुद्ध के सिद्धांतों का विकिरण आज विश्व के अनेक देशों में हैं, जिसमें मानवता के लिए कार्य करना, सर्व–धर्म समभाव और आपसी प्रेमभाव से रहना बताया है। उन सभी देशों में शांति कायम है जहाँ इनके नियमों का पालन होता है।

इस लेख का शीर्षक इसलिए ये रखा है की, आने वाले समय में भारत विज्ञान और प्रोद्यौगिकी, आयुर्वेद, योग, अन्तरिक्ष और सबसे महत्त्वपूर्ण विश्व–शांति में अपनी सबसे ज्यादा भूमिका निभाने वाला है और सभी देश ये जानते हैं कि भारत में जितनी आजादी किसी मनुष्य को है, वो किसी अन्य देश में नहीं है क्योंकि यहाँ सर्वत्र सर्वधर्म समभाव दृष्टिगोचर होता है। विश्व के किसी भी मुद्दे पर चर्चा करनी हो तो भारत की राय अवश्य ली जाती है, क्योंकि भारत ने कभी भी पीठ पीछे वार नहीं किया है। भारत हमेशा सकारात्मक सोच वाला देश रहा है, नकारात्मकता तो हमारे शब्दकोश में है ही नहीं। अब हम सबका ये दायित्व है कि हम मिलकर, हमारी सर्वथा प्रथम संस्कृति को विश्व संस्कृति बनने में सहयोग प्रदान करें। अगर हम प्रण कर लें तो जान भी रहेगी और जहान भी रहेगा। देशसेवा ही हमारा परम धर्म है, यही हमें विश्व शिखर तक पहुँचाएगा और उसी ऊँचाई से भारत सभी देशों में शांति स्थापना करता रहेगा।

विश्वजीत जारोली
सहायक आचार्य,
प्राणी शास्त्र विभाग

ईश्वरीय स्वरूप है : प्रकृति

वैदिक काल से लगातार आधुनिक काल तक जब भी साहित्य की बात आती है तो पेड़–पौधे, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा आदि को हमने देवता तुल्य मानकर पूजा करते हुए देखा है। हमारी भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि प्रकृति प्रदत वृक्ष हैं। हमारी संस्कृति में वृक्षों की विभिन्न अवसरों पर विभिन्न रूपों में पूजा की जाती है, क्योंकि वृक्ष देव रूप है और इनमें देवताओं का वास माना जाता है। इसलिए भारतीय संस्कृति में ऐसे पर्व, व्रत व त्योहार विशिष्ट तिथियों को आते हैं, जिनमें किन्हीं खास पेड़–पौधों जैसे तुलसी, पीपल, वट, नीम, आँवला, अशोक आदि की पूजा की जाती है, तुलसी का पौधा बहुत गुणकारी होता है। यह औषधि के रूप में कई रोगों से निजात दिलाती है। तुलसी का घर में होना शुभ माना जाता है। हमारी भारतीय संस्कृति में तुलसी को अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना गया है क्योंकि इससे हमें अनवरत प्राणवायु की प्राप्ति होती है।

पीपल से सुखानुभूति एवं 'कल्पवृक्ष' से संकल्प की प्रेरणा प्राप्त होती है। वैज्ञानिक शोध से यह सिद्ध होता है कि धरती के वृक्ष ऊँचे आसमान में बादलों को आकर्षित करते हैं। इन वृक्षों से हमें वर्षा प्राप्त होती है एवं वर्षा से ही समस्त जीवन चक्र संचालित होता है।

हमारा ऐसा मानना है कि वैदिक सभ्यता से ही हमने प्रकृति को ईश्वरीय स्वरूप में पूजा है इसके पीछे कहीं न कहीं जीवन चक्र का प्रकृति से महत्त्वपूर्ण नाता रहा है। परन्तु वर्तमान में हमने अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए जंगल के जंगल ऐसे काट दिये मानो कोई मूर्ख व्यक्ति अपने समय को काट देता है। हमें सदैव प्रकृति के प्रति चिन्तन–मनन करते हुए इसके संरक्षण की ओर कदम बढ़ाने चाहिए जिससे हम इस ईश्वरीय स्वरूप को बचाते हुए ईश्वर का धन्यवाद ज्ञापित कर सकें।

पेड़–पौधे तुम करो न नष्ट,
साँस लेने में होगा अति कष्ट।

ममता वैष्णव
तृतीय वर्ष, कला संकाय

प्रकृति की गोद

चंचल पग बढ़ गए मंदिर जाने को,
नन्हा कद उछल रहा घंटी बजाने को।
प्रयास उसका बाती जलाने को,
ढोंग आरती पुनः बुदबुदाने को।
परिक्रमा में नटखट सी दौड़,
पहले प्रसाद पाने की होड़।
एक दूजे को चंदन लगाने की होड़,
पीपल की आड़ में छुप जाने की होड़।
चंचल पग बढ़ गए मंदिर जाने को।।
मंदिर के बगीचे का निर्मल नज़ारा,
तुलसी संग खिलता नन्हा हजारा।
झूले, झड़ी सावन की, बेला गोधूली पावन सी,
रचा बसा आंनद प्रमोद, मेरा गाँव प्रकृति की गोद।
चंचल पग बढ़ गए मंदिर जाने को।
नन्हां कद उछल रहा पुनः, प्रकृति की ओर जाने को।।

इतिराज शर्मा
तृतीय वर्ष, विज्ञान संकाय

भूतल

भूतल पर हम बसते हैं,
हर दिन एक जीवन रचते हैं।
कभी–कभी रचने बसने में
फँस जाते हैं अपने जीव।
प्रकृति को सरल समझ हम,
कर जाते हैं उसे निर्जीव।
फिर नहीं रहता उसमें जीव,
संकट में पड़ जाते सब के जीव।
बचकर चलना, बचाकर चलना,
प्रकृति ही अपना जीव।

ममता चौधरी
तृतीय वर्ष, कला संकाय

सम्पत्ति

सम्पत्ति हमने पायी हज़ार,
प्रकृति ने दिया अपार।
कुछ पाया कुछ खोया हमने,
जीवन में सब दिया उखाड़।
जब हमने प्रकृति को छेड़ा,
उसने हमको शीघ्र खदेड़ा।
छोड़ा उसने अपना साथ,
खींच लिया अब अपना हाथ।
पछताया हर बार इंसान,
खोकर इसे कहाँ बने महान।
प्रकृति ही रक्षा मानव,
इसे छेड़ क्यों बने तू दानव।

रूखसार बानो
तृतीय वर्ष, कला संकाय

धरती

आधुनिक युग के अपराध का,
बढ़ा है अब प्रकोप।
आज फिर से रो उठी प्रकृति,
देखो धरती का अब प्रकोप।
समय–समय पर प्रकृति,
देती रही कोई ना कोई चोट।
कहीं बाढ़ कहीं सूखा,
कभी महामारी का प्रकोप।
कभी–कभी धरती हिलती,
भूकम्प में मरते है लोग।
समय रहते समझ लो ऐ मानव,
समय रहते बदल लो ऐ मानव।
आधुनिक युग के अपराध का,
बढ़ा है इतना प्रकोप।

अनिता चौधरी
तृतीय वर्ष, विज्ञान संकाय

आँचल

प्रकृति में ही माँ का आँचल है पाया,
जब कड़ी धूप में जी ललचाया।
सिर पर इसका प्रकोप है छाया,
तन पसीने से तर–बतर हो आया।
सभी प्राणियों में हाहाकार है छाया,
अब और कुछ भी नज़र न आया।
ठंडी छाँया को है मन तरसाया,
पेड़ के नीचे ही आराम फरमाया।
तब जाकर हमने सुकून है पाया,
प्रकृति है हम सब की काया।
फिर क्यों हमने इसे दर्द पहुँचाया।।

ममता जाट
प्रथम वर्ष, बी.ए.बी.एड.

राजनीतिक चिन्तन में प्रकृतिवाद की अवधारणा

प्रकृतिवाद पाश्चात्य राजनीतिक दार्शनिक चिन्तन की वह विचारधारा है जो प्रकृति को मूल तत्त्व मानती है। इसी को ब्रह्माण्ड का कर्ता व कारण मानती है। इस विचारधारा के अनुसार विश्व में केवल प्राकृतिक नियम कार्य करते है ना कि कोई आध्यात्मिक या अप्राकृतिक नियम। अर्थात् प्रकृतिवादी आत्मा, परमात्मा, स्पष्ट प्रयोजन की सत्ता में विश्वास नहीं करते। ये बुद्धि को विशेष महत्त्व देते हैं परन्तु फिर भी यह विचारक मानते हैं कि बुद्धि का कार्य केवल बाह्य परिस्थितियों तथा विचारों को काबू में लाना है प्रकृति को नहीं।

सर्वप्रथम प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक थेल्स ने 640 ईसा पूर्व में विचारधारा का प्रतिपादन किया और उन्होंने सृष्टि की रचना जल से सिद्ध करने का प्रयास किया था परन्तु स्वतंत्र रूप में इस दर्शन का बीजारोपण डिमोक्रीट्स द्वारा 460 ईसा पूर्व में ही कर लिया गया था।

थेल्स ने जगत का मूल कारण जल को माना, एनेक्सी मेडम ने वायु को, हैरेक्लाइट्स ने अग्नि को एवं एम्पोडोक्लीज ने पृथ्वी, जल, अग्नि तथा वायु सभी को स्थायी तत्त्व माना। प्रसिद्ध आधुनिक सामाजिक समझौतावादी विचारक टॉम्स और रूसो ने भी प्रकृति को ही मूर्त माना है। वे मानते हैं कि प्रकृति सभी गुणों व ज्ञान से युक्त है। स्वयं जीन जैम्स रूसो ने अपनी पुस्तक ''द एमिली'' (1762) में ''प्रकृति की ओर चलो'' का नारा दिया। उसके इस नारे से संकेत मिलता है कि वह मानव को दूषित समाज से दूर गाँव की प्राकृतिक छत्र छाया में ले जाना चाहता था। रूसो ने तो प्रकृति के महत्त्व का बखान करते हुए अपने दर्शन में यहाँ तक भी कहा कि ''यह वह विशेष गुण है जो मानव जीवन को विकास एवं उन्नति की ओर ले जाने में सहायक होगा।'' रूसो मानते थे कि भौतिकवाद में विनाश की जड़ें छुपी हुई है। इसलिए उन्होंने प्रकृतिवाद का नारा दिया। इतना ही नहीं उन्होंने शिक्षा जगत में भी प्रकृतिवाद को नई पहचान दी और माना कि वर्तमान शिक्षा प्रक्रिया के माध्यम से हम अपने पूर्वाग्रह बच्चों पर आरोपित कर देते हैं। इसलिए बच्चों पर अपने विचारों को उपदेशात्मक शैली में लादने की बजाय उसे स्वयं प्रकृति के साथ सीखने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए जो कुछ भी हो रूसो प्राकृतिक जीवन का प्रबल समर्थक है इसलिए वह शिक्षा को भी स्वाभाविक प्राकृतिक ढंग से देना चाहता है और शिक्षक का अस्तित्व कम से कम रखना चाहता है। महान दार्शनिक पैरी ने प्रकृतिवाद को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''प्रकृतिवाद विज्ञान नहीं है वरन् विज्ञान के बायें में दायाँ है।''

प्रकृतिवादी परमात्मा और ''सुपर नेचुरल पावर'' को भी प्रकृति से परे मानते हैं और सामाजिक कृत्रिमता का विरोध करते हैं। इसका आरम्भ तो मानवीय जगत के आरम्भ से ही माना जाता है। परन्तु यह भी सत्य है कि भले ही प्रकृतिवाद का

वर्णन हमें सर्वप्रथम यूनानी दर्शन में देखने को मिला किन्तु भारतीय दर्शन में भी इसकी झलक स्पष्ट रूप से नज़र आती है। भारत में भी वैदिक काल से ही मनुष्य के विचार अग्नि, जल और पृथ्वी से सम्बद्ध पाये जाते हैं। वैदिक संस्कृति प्रकृति संरक्षण को न केवल बढ़ावा देती है अपितु सभी पशु, पक्षियों, नदियों, पहाड़ आदि के कल्याण की बात भी करती है। हिन्दू मान्यता के अनुसार हमारे 33 प्रकार के देवी देवता हैं जिसमें 12 आदित्य, 11 रूह, 8 वसु, रूह और प्रजापति है। जिन 8 वसुओं का उल्लेख वेदों में हैं वे आप, ध्रुव, चंद्रमा, धरती, वायु, अग्नि, जल और आकाश है। हिन्दू समाज इन वसुओं की आराधना करता है और इन्हें नुकसान पहुँचाने को पाप मानता है। यही प्रकृतिवाद है। यद्यपि पाश्चात्य यूनानी और भारतीय दर्शन में ऐसे अनेक विचारक एवं जीवशास्त्री हुए जिन्होंने प्रकृति को ही जगत का मूल तत्त्व व स्त्रोत माना जिमें हर्बट स्पेंसर, एपीम्यूरस लेकुसियस, डार्विन, हॉब्स, रूसो, 20वीं शताब्दी में बनार्ड शा, रविन्द्रनाथ टैगोर, दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द एवं महात्मा गाँधी आदि प्रमुख है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे आदर्शवादी विचारक ने गुरूकुल की स्थापना प्रकृति की गोद में की है। टैगोर कहा करते थे कि ''विधाता ने हमें नगरों ईंटों व गारे के बीच जन्म लेने के उद्देश्य से नहीं बनाया।'' वे कहते थे कि ''वृक्ष, पौधे, शुद्ध वायु, स्वच्छ जल आदि बैंचो, श्याम पट्ट, पुस्तकों एवं परीक्षाओं से कम आवश्यक नहीं है।'' अपने कई प्रसिद्ध लेखों में उन्होंने प्रकृतिवाद का समर्थन किया है। उन्होंने लिखा है, ''यदि एक आदर्श विद्यालय की स्थापना करना है तो इसे मानव के निवास स्थान से दूर एकान्त में विस्तृत आकाश के तले विस्तृत क्षेत्र पर वृक्षों और पौधों के बीच में स्थापित करना चाहिए।'' गाँधीजी आदर्शवादी होते हुए भी एक अर्थ में प्रकृतिवादी थे। वे कृत्रिम जीवन कृत्रिम संस्कृति के विरोध में प्राकृतिक एवं ग्रामीण संस्कृति के समर्थक थे और अपनी आवश्यकताएं कम से कम रखना चाहते थे। भारतीय दर्शन में इस दृष्टिकोण को विस्तार तत्त्व मीमांसा, सांख्य, वैशेषिक, चार्वाक, बौद्ध एवं जैन दर्शन में भी पाया जाता है।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि चाहे यूनानी दर्शन हो या भारतीय दर्शन सभी में प्रकृति को देवतुल्य माना गया है। प्रकृतिवादियों का विश्वास है कि वर्तमान में इंसान प्रकृति से दूर हो गया है इसके कारण वह दुखी है और इसी कारण उसे इसका कोपभाजन होना पड़ रहा है। आज जब सम्पूर्ण विश्व कोरोना वायरस जैसी भंयकर महामारी के दौर से गुजर रहा है तो यह दार्शनिक विचारधारा पुनः जीवित हो उठी जिसकी बात कभी 640 ईसा पूर्व कही गयी थी। परन्तु हम सभी आधुनिकता की चकाचौंध में इतने उलझ गए हैं कि विश्व में केवल प्राकृतिक नियम ही काम करते हैं अर्थात् प्रकृति ही ईश्वर है। आज एक बार पुनः उसी आत्म मंथन की जरूरत है जिसे कभी रूसो ने अपने विचारों के माध्यम से कहा था ''प्रकृति की ओर चलो।''

डॉ. रूचि मिश्रा
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग

वक़्त

वक़्त था..... वो भी अनुभवी,
जब ना जानी इंसान ने अपनी जिम्मेदारी।
कलयुग के इस दौर में उसने की अपनी मनमानी,
ओर रख दी दुनिया खत्म होने को सारी।
जब धरती की सत्ता ने मांगी सिर्फ शांति,
गफलती इंसान ने उसे दी हमेशा अशांति।
इन्सानी दुनिया के लिए एक डरावना मोड़ था,
जो चहकती थी कभी, उस दुनिया को मिला ये नया रोग था।
सोच रहा था इंसान यह वक़्त है आसान,
दिलों के तूफानों में फँस गए, जब शहर बन गये शमशान।
अपने घरों की जरूरत जब तक जानी,
जब मुश्किल लगने लगी कोरोना से संघर्ष की कहानी।

सलोनी गुप्ता
प्रथम वर्ष, कला संकाय

अन्तर्निर्भरिता की दृष्टि से प्रकृति और समाज

समाज और प्रकृति एक दूसरे पर निर्भर है। जहाँ समाज की आधारशिला प्रकृति पर आश्रित है वहीं प्रकृति की सुस्थिरता सामाजिक और व्यक्तिगत संवेदनशीलता पर निर्भर करती है। इस सम्बन्ध में समाजशास्त्री राधाकमल मुकर्जी ने सामाजिक पारिस्थितिकी की अवधारणा के माध्यम से यह समझाने का प्रयास किया कि प्रकृति और समाज का अटूट सम्बन्ध है। सामाजिक व्यवस्था का आधार स्तम्भ प्रकृति ही है, यहाँ तक कि हमारी संस्कृति, रहन–सहन, खान–पान, विवाह और परिवार का स्वरूप, खाद्यान का उत्पादन और उपयोग, उद्योग धन्धों का विकास आदि प्रकृति पर निर्भर करता है। इसी प्रकार से यदि हम इतिहास को समझने का प्रयास करें तो हमारी सभ्यताओं की उत्पत्ति का आधार भी प्रकृति ही रही है। विशेष तौर पर मैदानी क्षेत्र और नदियों से निकटता। हमारे प्राचीन साहित्य और धर्मग्रन्थों में भी प्रकृति की सार्थकता को रेखांकित किया गया है और इसीलिए प्राचीन काल से ही प्रकृति के संरक्षण के लिए प्रयास करने पर जोर दिया जाता रहा है। प्रकृति हमारी विविध आवश्यकताओं की पूर्ति का माध्यम है चाहे वह शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, नैतिक और आध्यात्मिक हो लेकिन हमारा यह दायित्व भी है कि हम प्रकृति के संरक्षण में अपना योगदान देवें।

प्रकृति हमारी आध्यात्मिकता का केन्द्र बिन्दु भी है। हम प्रकृति की पूजा करते हैं, हमारी संस्कृति में प्रकृति के तत्त्वों के प्रति श्रद्धा और विश्वास रखा जाता है। हमारे अधिकतर व्रत, त्योहार प्रकृति के प्रति असीम श्रद्धा को प्रदर्शित करते हैं। मैक्स मूलर ने तो प्रकृति को ही धर्म की उत्पत्ति का आरंभिक स्वरूप माना और समाजशास्त्रीय विचारक इमाईल दुर्खीम ने टोटम (प्रकृति के प्रति आस्था) के माध्यम से जनजातियों में धर्म, श्रद्धा और विश्वास को व्यक्त किया है। इस प्रकार के उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट होता है कि प्रकृति और धर्म का भी घनिष्ठ सम्बन्ध है।

हमारी मानसिकता इस प्रकार की हो गयी है कि हम अपने और दूसरों की प्रशंसा भी करते हैं और आलोचना भी। प्रकृति की स्वच्छता और स्वास्थ्य के विशेष संदर्भ में बात करें तो हम दूसरे देशों की स्वच्छता के उदाहरण देते हैं लेकिन स्वयं प्रकृति की रक्षा के लिए जवाबदेही नहीं निभाते हैं। हम जापान का उदाहरण देख सकते हैं। जापान की भौगोलिक परिस्थितियाँ चुनौतियों से भरी है लेकिन नागरिकों की प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता की हम मिसाल दे सकते हैं। वे स्वयं अपने घर और आस– पास की स्वच्छता को बनाए रखना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं। यहाँ सवाल उठता है भारतीय सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए क्या हम ऐसा कर पाते हैं ? क्या हम प्राकृतिक और सामाजिक सुस्थिरता के लिए अपना सर्वोत्तम दे पाते हैं ? वर्तमान दौर की बात की जाए तो जहाँ स्वच्छ भारत अभियान, स्वच्छता ही सेवा, महात्मा गांधी की 150 वीं जयन्ती के माध्यम से सरकार द्वारा लोगों को प्रकृति और स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के प्रयास किए जा रहे हैं। सत्य यही है कि हम प्रकृति की महत्ता को जानते तो है लेकिन इसके संरक्षण हेतु प्रयास नहीं करते हैं।

वस्तुतः समाज और प्रकृति का सम्बन्ध अन्योन्याश्रितता लिए हुए है। प्रकृति से हम बहुत कुछ पाते हैं तो उसे देते कम हैं। यह देना हमारी जवाबदेही का हिस्सा है जिसके लिए हमे स्वयं में बदलाव करने की आवश्यकता है। आईए हम यह संकल्प लें कि हम प्रकृति की सौम्यता और सुन्दरता को बनाए रखने में अपना योगदान दें ताकि व्यक्तिगत और सामाजिक स्वास्थ्य की परिकल्पना सार्थक हो जाए।

डॉ. मितेश जुनेजा
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग

सुगम जीवन प्रदाता : हमारी प्रकृति

प्रकृति ने हमारा जीवन स्वयं की तरह सरल एवं सुगम बनाया है। हमने पता नहीं क्यों! भौतिकवादिता के चंगुल में फँसकर इसे समाप्त प्राय: ही कर दिया है। वर्तमान में किसी मनुष्य से बात करो तब उसका तनाव उसके शब्दों में स्पष्ट झलकता है। यदि हम हमारे समय से ठीक थोड़े से पूर्व के समय अर्थात् फ्लेश बैक में जाकर देखें तो संसाधन भले ही कम थे पर प्रेम व सहृदयता संसाधनों को कहीं पीछे छोड़ती हुई नज़र आती है। कितना सुकून था, परिवारों में सब लोग एक ही अपने छोटे बड़े घर में रहकर अत्यंत प्रसन्न रहा करते थे एक–दूसरे की भावनाओं को अच्छे से समझते हुए सम्मान बनाये रखते थे। एक ज़मीन, एक घर, एक परिवार हुआ करते थे परंतु जब से अनेक ज़मीन, अनेक घर, अनेक परिवार हुए हैं तब से भौतिक संसाधनों ने जन्म लेकर सब कुछ नष्ट सा कर दिया। जहाँ धर्म, संस्कृति, मान–मर्यादा, आचरण की बातें हुआ करती थी वहीं अब कहानी घर–घर की होकर संस्कारों की विलुप्तता नज़र आने लगी है। आज हमारी यह पीढ़ी नहीं जानती कि किसी चीज़ का अभाव अपने जीवन में क्या मूल्य रखता है। दादा–दादी, नाना–नानी, गाँव, ननिहाल के संस्कारों का दूर–दूर तक इस नव पीढ़ी में कोई सम्बन्ध नज़र नहीं आता, शायद इसके मूल में जिम्मेदार हम स्वयं हैं।

वर्तमान की स्थितियों को देखकर ऐसा लगता है मनुष्य इतनी भाग दौड़ व्यर्थ में ही क्यों कर अपना श्रम व जीवन समाप्त प्राय: सा कर रहा ? अक्सर बड़े बुजुर्गों एवं विद्वानों ने कहा है कि ''सांई इतना दीजिए जामै कुटुम्ब समाय। मैं भी भूखा न रहूँ साधु न भूखा जाय।।'' तब लगता है जीवन को आवश्यक तो खान–पान व मान–सम्मान के अतिरिक्त कुछ नहीं है फिर इतना दिखावा क्यों ? अक्सर मनुष्य भौतिक दिखावे के कारण वर्तमान के इतने सारे यत्न करता हुआ दिखाई देता है परन्तु वह भूल जाता है कि सबका भरण–पोषण करने का दायित्व ईश्वर का है। तब ज्ञान होता है कि वाकई प्रकृति ने असंख्य जीव दिये हैं। वह अपना जीवन चलवाने में सामर्थ्य रखती है। तब हर जीव क्यों व्यर्थता में अपना श्रम व समय नष्ट करता है। इन्हीं क्षणों को सोच मन अत्यंत सरल एवं भारहीन होने लगता है अर्थात् मनुष्य को व्यर्थ की आकांक्षाओं को त्याग प्रकृति से तादात्मय बिठाना चाहिए ताकि प्रकृति जीवन जीने की सुगम राह प्रदान करे।

।।वसुधैव कुटुम्बकम्।।

अमित दाधीच
प्रशासनिक अधिकारी

पेड़

पेड़ जिसने धूप कभी मुझे लगने ना दी,
अपने आपमें छुपाके रखा।
नज़र किसी की लगने ना दी,
याद आते हैं बचपन के दिन।
जब तुम मुझे खेल खिलाते थे,
हर बार रोने पर तुम मुझे हँसाते थे।
मेरी हर साँसे तेरा अहसास, जब चाहे
इसे तुम ले लेना,
छोड़ के ना जाना, चाहे मेरी साँसे भी
तुम ले लेना।

बीना वैष्णव
तृतीय वर्ष, कला संकाय

वर्तमान में प्रकृति का स्वरूप

प्रकृति जिसका अर्थ है सुन्दरता, अद्भूत और अशून्य। आज प्रकृति का अर्थ पूर्ण रूप से बदल चुका है। लोगों के लिए प्रकृति का मतलब केवल अपने पेड़–पौधों से हैं। भारत को विविधता का देश कहा जाता है। क्योंकि यहाँ सभी छः ऋतुएँ आती है। वर्तमान में प्रदूषण व जलवायु परिवर्तन सबसे बड़ी समस्या है। भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व इस समस्या से जूझ रहा है। इसका प्रमुख कारण जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण एवं वृक्षों की कटाई है। जलवायु में परिवर्तन का मुख्य कारण वर्षा ऋतु में वर्षा नहीं होना और बिना वर्षा ऋतु के वर्षा होने से प्रकृति का संतुलन असंतुलित हो जाता है जिससे गर्मी का तापमान बढ़ गया है। प्रदूषण जो कि वायु को प्रभावित करता है। इसका प्रमुख कारण औद्योगिक क्षेत्र है तथा वाहनों से निकलने वाला दूषित धुँआ है। जिसके प्रभाव को रोकने के लिए वृक्ष लगाये जाते हैं परन्तु अब स्थिति ये है कि मानव अपनी संतुष्टि के लिए पेड़–पौधों को ही नष्ट करता जा रहा है। वृक्षों के नष्ट होने से जीव–जन्तुओं का भी अस्तित्व खत्म होता जा रहा है। यदि मनुष्य प्रकृति से ऐसे छेड़छाड़ करता रहेगा तो एक समय बाद मनुष्य का अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा। मनुष्य से अनुरोध है कि प्रकृति को अपनी संतान की तरह देखभाल करे। प्रकृति हमारा स्वर्ग है स्वर्ग को स्वर्ग ही रखना अतिमहत्त्वपूर्ण है। प्रकृति हमारा जीवन है। इसे खत्म ना करें। प्रकृति खत्म तो जीव की समाप्ति निश्चित है।

सोनु यादव
प्रथम वर्ष, विज्ञान संकाय

कॉलेज के वे दिन

आज वक़्त रोकने को जी चाहता है,
यहाँ से न जाने को जी चाहता है।
बच्चे बनकर ही तो आए थे हम,
क्यों बड़े हो गये अब सब।
एक दूसरे से कितने पराए थे हम सब,
कॉलेज के कुछ दिनों में ही
एक हो गए सब।
पहले एक दूसरे से
अंजान हुआ करते थे हम,
आज एक दूसरे की जान बन गए हैं हम।
सोचते थे कि जल्दी ही
यहाँ से चले जाएंगे,
अब तो यह भी नहीं पता कि
आगे कहाँ जाएंगे।
याद आएगा हम सबको
यूँ बेस्टी से बिछड़ जाना,
वो रात को देर से सोना,
जल्दी जाग जाना।
दोस्तों न जाने,
आज दिल में क्या आता है,
वक्त रोकने को जी चाहता है।
यह समय कुछ जल्दी ही बीत गया,
आज यह एक बार फिर मुझसे जीत गया।
पढ़ते–पढ़ते आज ये दिन भी आ गया,
जीवन में एक नया पड़ाव फिर आ गया।
सब अपनी मंज़िल को फिर बढ़ जाएंगे,
तब ये यार दोस्त ही तो याद आएंगे।
अलग होंगी मंजिलें और अलग होंगे हम,
आ गया वो मोड़,
जिसमें अलविदा कहेंगे हम।
अब कॉलेज के वे दिन बहुत याद आएंगे।।

गुंजन परिहार
प्रथम वर्ष, विज्ञान संकाय

पशुओं के लिए वरदान : अजोला पादप

राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पशुपालन की सदैव महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। पशुपालन व्यवसाय लघु और सीमान्त किसानों, ग्रामीण महिलाओं और भूमिहीन कृषि श्रमिकों को रोजगार के पर्याप्त व सुनिश्चित अवसर देकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को ठोस आधार प्रदान करता है। परन्तु आज कृषि उत्पादों की कीमत में अनिश्चितता और कृषि आदानों की तेजी से बढ़ती लागत, भूजल स्तर में गिरावट के कारण कृषि लागत बढ़ गई है। यही कारण है कि पिछले कुछ वर्षों में पेशे के रूप में खेती के प्रति किसानों का आकर्षण कम हो रहा है। इस समस्या के समाधान के लिए अजोला की खेती बहुत ही लाभकारी हो सकती है।

अजोला एक महत्त्वपूर्ण बहुगुणी फर्न है जिसका उपयोग पशुओं, मछली एवं कुक्कुट के चारे के रूप में उपयोग किया जाता है। अजोला बहुत तेजी से बढ़ने वाली जलीय फर्न है जो पानी की सतह पर छोटे–छोटे समूह में सघन हरित गुच्छ की तरह तैरती रहती है। भारत में मुख्य रूप से अजोला की जाति अजोला पिन्ना पायी जाती है। यह गर्मी सहन करने वाली किस्म है। इसकी विशेषता यह है कि यह अनुकूल वातावरण में 5 दिनों में ही दुगुना हो जाता है।

अजोला में 3.5 प्रतिशत नत्रजन तथा कई तरह के कार्बनिक पदार्थ होते हैं जो भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाते हैं। यह किसानों को कम कीमत पर बेहतर जैविक खाद मुहैया कराने की दिशा में बड़ा कदम है। दुधारू पशु को अजोला खिलाने से दूध का उत्पादन और गुणवत्ता बढ़ती है। अजोला दुधारू पशुओं के लिए घी का काम करता है। साथ ही किसानों के जीविकोपार्जन के लिए वरदान साबित हो रहा है।

अजोला से पशुओं में कैल्शियम, फॉस्फोरस, लोहे की आवश्यकता की पूर्ति करता है। अजोला में प्रोटीन, आवश्यक अमीनो अम्ल, विटामिन ए, विटामिन बी–12, बीटा–कैरोटीन एवं खनिज लवण जैसे कैल्शियम, पोटेशियम, आयरन कॉपर, मैग्नेशियम आदि प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। यदि दुधारू पशु को 1.5 से 2 कि.ग्रा. अजोला प्रतिदिन दिया जाता है तो दुग्ध उत्पादन में 15 से 20 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गयी है और इसे खाने वाले गाय–भैंसों की दूध की गुणवत्ता भी काफी बढ़ जाती है। दूध में गाढ़ापन बढ़ने के अलावा इनकी प्रजनन क्षमता भी काफी बढ़ जाती है। साथ ही यह भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए हरी खाद के रूप में भी उपयुक्त हैं।

अजोला तैयार करने की विधि –

- किसी छायांदार स्थान पर 60 X 10 X 2 मीटर आकार की क्यारी बनायें। क्यारी में 120 गेज की सिलपुटिन शीट को बिछाकर उपर के किनारों पर मिट्टी का लेप कर व्यपस्थित कर दें।
- सिलपुटिन शीट को बिछाने की जगह सीमेंट की पक्की क्यारी भी तैयार कर सकते हैं।
- 80–100 किलोग्राम साफ उपजाऊ मिट्टी की परत क्यारी में बिछा दें, 7 किलो गोबर (2–3 दिन पुराना) 10–15 लीटर पानी में घोल बनाकर मिट्टी पर फैला दें।
- क्यारी में 400–500 लीटर पानी भरें जिससे क्यारी में पानी की गहराई लगभग 10–15 से.मी. तक हो जावे।
- अब उपजाऊ मिट्टी व गोबर खाद को जल में अच्छी तरह मिश्रित कर देवें।
- इस पर 2 किलो ताजा अजोला को फैला देवें इसके पश्चात् 10 लीटर पानी को अजोला पर छिड़कें जिससे अजोला अपनी सही स्थिति में आ सकें।
- क्यारी को अब 50 प्रतिशत नायलॉन जाली से ढककर 15–20 दिन तक अजोला को वृद्धि करने दें।
- 21 वें दिन से औसतन 15–20 किलोग्राम अजोला प्रतिदिन प्राप्त की जा सकती है।
- प्रतिदिन 15–20 किलोग्राम अजोला की उपज प्राप्त करने हेतु 20 ग्राम सुपरफॉस्फेट तथा 50 किलोग्राम गोबर का घोल बनाकर प्रति माह क्यारी में मिलावें।
- भेड़ एवं बकरियों को 150–200 ग्राम ताजा अजोला खिलाने से शारीरिक वृद्धि एवं दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी होती है।
- प्रत्येक 3 माह पश्चात् अजोला को हटाकर पानी व मिट्टी बदलें तथा नई क्यारी के रूप में दुबारा पुनर्संवर्धन करें।
- अजोला की अच्छी बढ़वार हेतु 20–35 डिग्री सेन्टीग्रेड तापक्रम उपयुक्त रहता है।

अजोला क्यारी से हटाये पानी को सब्जियों एवं पुष्प खेती में काम में लेने से यह एक वृद्धि नियामक का कार्य करता है जिससे सब्जियों एवं फूलों के उत्पादन में वृद्धि होती है। अजोला एक उत्तम जैविक एवं हरी खाद के रूप में कार्य करता है।

गीता पालीवाल
सहायक आचार्य,
वनस्पति विज्ञान विभाग

प्रकृति चिन्तन

प्रकृति है दुनिया का गहना,
इस आवरण का क्या कहना।
कैसे बताएं मानव और प्रकृति की कहानी पूरी,
मानव क्यों बना रहा है प्रकृति से दूरी।
फूल पत्तियाँ है इस सुन्दरता का गहना,
बिना सुन्दरता के जीवन का क्या कहना।
विद्वानों ने एक सच्ची बात कही है,
मनुष्य के आगे प्रकृति हार सी गई है।
बिना प्रकृति के हरियाली कहाँ से लाओगे,
अन्त में स्वयं ही पछताओगे।
जब धरती को खुद ही रेगिस्तान बनाओगे,
तो सुन्दर–सुन्दर फोटो कैसे खिंचवाओगे।
प्रकृति को ना तुम हानि पहुँचाओ,
क्या होगा बिना प्रकृति के देखते जाओ।
समझ सको तो समझो प्रकृति कुछ कह रही है,
आपके सुख के लिए वह कितनी यातनाएं सह रही है।
कहीं झरने तो कहीं नदियाँ बह रही है,
प्रकृति अपनी दुखभरी कहानी कह रही है।
प्रकृति क्या है समझो, ना सिर्फ लिखो,
प्रकृति के साथ मिलकर रहना सीखो।

प्रियंका प्रजापत
प्रथम वर्ष, बी.ए.बी.एड.

बदलती प्रकृति

एक वर्ष में तू कितने रूप बदलती,
कभी वर्षा तो कभी हेमन्त बन जाती।
शीत से रूठकर ग्रीष्म में तू हमें तपाती,
वसन्त तो कभी शरद का आनंद दिलाती।
तू क्यों गिरगिट की तरह रंग बदलती,
कभी हरी तो कभी भूरी बन जाती।
कभी–कभी तो स्वर्ग को भी धरती पर ले आती,
देखो एक वर्ष में कितने रूप बदलती।
कभी खुद हँसती तो कभी हमें हँसाती,
कभी–कभी तो विनाशकारी बन जाती।
तू अपनी चंचलता दिखलाती,
देखो एक वर्ष में कितने रूप बदलती।
कभी भूकम्प से तू अपना रोब दिखाती,
तो कभी तू इतनी शांत बन जाती।
पर सबसे प्यारी बनकर तू
अपनी चंचलता दिखलाती,
एक वर्ष में तू कितने रूप बदलती।
भौंरो की तरह है तू मंडराती,
कहीं दिन तो कहीं रात बन जाती।
कहीं ग्रीष्म तो कहीं शीत बन जाती,
एक वर्ष में तू कितने रूप्बदलती।

सरिता दिवाच
प्रथम वर्ष, बी.ए.बी.एड.

पिता

उस शख्स के माथे पर उठी लकीरों में समाया होता है ज़िन्दगियों का भार,
पर जबान से उफ नहीं निकलती।
उस शख्सियत को शब्दों में बाँध पाना मुश्किल है शायद इसलिए पिता पर,
कविता लिख पाना मुश्किल है।
उनके हृदय से छलका प्रेम न तो आँखों से पानी बरसाता है उस प्रेम को,
परिभाषित कर पाना मुश्किल है।
शायद इसलिए पिता पर कविता लिख पाना मुश्किल है,
जिनकी चिंताए विशाल सी है।
उस चिंता की व्यथा में बिखरी मुस्कान को समझ पाना मुश्किल है,
शायद इसलिए पिता पर कविता लिख पाना मुश्किल है।

प्रियंका राजपुरोहित
द्वितीय वर्ष, बी.ए.बी.एड.

मेहनत

बिन मेहनत के जीवन का सपना साकार नहीं होता,
केवल बातें करने से बेड़ा पार नहीं होता।
जिनको मिली है मंजिलें, वो रातों रात नहीं पनपे,
कठिन परिश्रम था, उनका मन पर था नियंत्रण।
मेहनत की बूंद से संचित फल बेकार नहीं जाता,
और केवल बातें करने से बेड़ा पार नहीं होता।
तन की सुन्दरता घटती है, समय की तेज कटारी से,
मन की सुन्दरता बढ़ती है, मेहनत के संग यारी से।
वह दीवार ढह जाती है, जिसका कोई आधार नहीं होता,
और केवल बातें करने से बेड़ा पार नहीं होता।

स्वाति शेखावत
द्वितीय वर्ष, बी.ए.बी.एड.

हरण

मेरा दर्द, क्या बताऊँ मेरी हालत।
जिनके कारण मैं हर वक्त, हँसती खिलखिलाती थी।
बिना डरे झूमती थी, आज लगे हैं सब मुझे मारने।
मगर ये आसान नहीं, बता रही ना छेड़ो मुझे।
यदि ना रूके मेरा हरण, तो हो जायेगा मेरा मरण।
सच कहती हूँ, तोड़ चलूँगी रिश्ता तुम संग।
फिर कितने भी उपकारी हो तुम्हारे रंग।
जब शांत हूँ बाला हूँ, जब मैं जली तो ज्वाला हूँ।
मैं प्रकृति हूँ मेरा दर्द क्या बताऊँ तुम्हें।

हर्षिता देवल
प्रथम वर्ष, बी.ए.बी.एड.

मानव

हे मानव!
तू एक बार इस शहर की चकाचौंध से बाहर निकल तो सही।
प्रकृति की सुन्दरता को निहार तो सही।
कहीं गुलाब और गुड़हल बातें कर रहे हैं।
तो कहीं चमेली के फूल खिलखिला रहे हैं।
कहीं पानी कल–कल करता हुआ बह रहा है।
तो कहीं हरियाली लहरा रही है।
कहीं बादलों का सुन्दर दृश्य है ।
तो कहीं इन्द्रधनुष का मनोरम दृश्य है।
कहीं डूबता हुआ सूरज अपनी लालिमा बिखेर रहा है।
तो कहीं पक्षी चहचाह रहे हैं।
हे मानव!
तू एक बार इस शहर की चकाचौंध से बाहर निकल तो सही।
प्रकृति की सुन्दरता को निहार तो सही।
इस प्रकृति के आनंद को महसूस कर तो सही।

अंजू गोस्वामी
प्रथम वर्ष, बी.ए.बी.एड.

तकनीक का अनुकूलतम उपयोग एवं पर्यावरण संरक्षण

आज के समय हम डिजिटल क्रांति की और तेजी से अग्रसर हो रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप सभी क्षेत्रों में कम्यूटर एवं सूचना प्रोद्यौगिकी के चलन को बढ़ावा दिया जा रहा है। सूचना प्रोद्यौगिकी, कम्यूटर और इससे जुड़े विविध तकनीकों के उपयोग के साथ हम इस भ्रान्ति को भी पाले हुए हैं कि इसका ज्यादा उपयोग करने से हम पर्यावरण की रक्षा कर रहे हैं। परन्तु वास्तविकता में इसके उलट हम इसके अत्यधिक उपयोग से पर्यावरण को ओर ज्यादा नुकसान पहुँचा रहे हैं। वस्तुत: किसी भी प्रक्रिया के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों को जानने के लिए कार्बन फुटप्रिंट का आंकलन किया जाता है सरल अर्थ में कार्बन फुटप्रिंट को एक व्यक्ति, घटना, संगठन या उत्पाद के कारण होने वाले कुल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के रूप में परिभाषित किया जाता है। हम इसे ऐसे समझ सकते हैं कि एक कम्प्यूटिंग उपकरण को बनाने में मानव श्रम एवं ऊर्जा की खपत होती है। तदुपरांत उस उपकरण या तकनीक का इस्तेमाल करने में भी ऊर्जा एवं बिजली की आवश्कता होती है। सामान्यत: हम सभी बिजली उत्पादन की प्रक्रिया से होने वाले प्रदूषण एवं उस से पर्यावरण पर होने वाले दुष्प्रभावों से भलीभांति परिचित हैं। इसके साथ ही ऊर्जा के उत्पादन से प्रदूषण और हर साल लाखों टन ग्रीनहाउस गैसों का वायुमंडल में उत्सर्जन भी होता है।

अब एक और पेपरलेस होने पर जोर दिया जा रहा है और यह माना जा रहा है कि पेपरलेस होने से कागज की खपत कम होगी और पर्यावरण को नुकसान कम पहुँचेगा परन्तु अगर हम इस पर मंथन करें तो हम पायेंगे कि निरंतर बढ़ती डिजिटल क्रांति एवं सूचना प्रोद्यौगिकी से पर्यावरण का अधिक नुकसान हो रहा है। केवल कागज का उपयोग कम करके ही अगर हम यह समझ लें कि हमने पर्यावरण संतुलन के लिए कार्य किया है तो यह भी हमारी बहुत बड़ी गलतफहमी है। उदहारणत: आजकल के सभी उपकरणों में बैटरी का उपयोग किया जाता है जिसे अगर सही तरह से रिसाईकिल नहीं किया जाए तो इससे भी पर्यावरण प्रभावित होता है। एक और ज्वलंत उदहारण से हम इसे समझ सकते हैं कि आज देश भर में ए.टी.एम. लगे हुए हैं, जिनमे रिसीप्ट प्रिंट न करने का आग्रह किया जाता है लेकिन दूसरी और उनमे चौबीसों घंटे चलने वाली मशीन, वातानुकूलन एवं ट्यूबलाइट्स पर्यावरण को कहीं अधिक क्षति पहुँचाते हैं। इसी प्रकार गूगल पर एक सर्च में प्रयुक्त होने वाली बिजली के उत्पादन, सर्वर का रखरखाव, ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन तथा ई–वेस्ट इत्यादि के आँकड़ों पर नज़र डालें तो हम पर्यावरण संरक्षण पर सवाल खड़े कर रहे हैं। इसी क्रम में सूचना प्रोद्यौगिकी के उपकरण जब चलन में नहीं रहते तो इस तरह से उत्पन्न होने वाले कचरे को ई–वेस्ट कहा जाता है। ई–वेस्ट को सही तरह से नष्ट करने एवं रिसाईकिल करने का एक सुनियोजित एवं व्यवस्थित तरीका होता है, जिनका पालन न करने से यह ई–वेस्ट भी पर्यावरण को प्रभावित करता है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि हम नवीन तकनीक का प्रयोग करना बंद कर दें। हमें बस इस बात का ध्यान रखना है कि हमारे द्वारा प्रयोग में ली जाने वाली तकनीक का कार्बन फुटप्रिंट कम से कम हो। अर्थात् हम पर्यावरण से लेते बहुत है, पर उसे देते कितना है, यह सोचने की आवश्यकता है। असल में हमारी पर्यावरण के प्रति एक व्यापक जिम्मेदारी है लेकिन हम जानते बूझते उसका निर्वहन करने से कतराते हैं। तकनीक का आवश्यक और अनुकूलतम उपयोग करना हमारा पर्यावरण संरक्षण के प्रति एक कदम हो सकता है साथ ही गुणवत्तापूर्ण और मानकीत उपकरणों के उपयोग से भी हम पर्यावण की रक्षा के लिए प्रयास कर सकते हैं।

रवि सोनी
सहायक आचार्य,
कम्प्यूटर विज्ञान विभाग

रूद्राक्ष

प्रकृति में रूद्राक्ष एक आध्यात्मिक वनस्पति है। इससे हमें आध्यात्मिक चिन्तन की प्रेरणा प्राप्त होती है। इसके बारे में हम सब जानते हैं परन्तु ये आया कहाँ से और कैसे प्राप्त होता है? इसके संदर्भ में हमें विचार करना चाहिए। रूद्राक्ष एक जंगली फल है, इसकी पैदावार समुद्र तल से लगभग दो हजार मीटर तक की ऊँचाई वाले पर्वतीय व पठारी क्षेत्रों में होती है। भारत में रूद्राक्ष हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों, बंगाल, असम, बिहार, मध्यप्रदेश एवं अरूणाचल प्रदेश के जंगलों, सिक्किम, हरिद्वार, गढ़वाल एवं देहरादून के पर्वतीय क्षेत्रों तथा दक्षिण भारत के नीलगिरि, मैसूर और अन्नामलै, उत्तरकाशी के गंगौत्री–यमुनोत्री क्षेत्र में पाये जाते हैं। यह कर्नाटक में भी पाये जाते हैं परन्तु वहाँ के रूद्राक्ष वानस्पतिक दृष्टिकोण से भिन्न है क्योंकि यहाँ के रूद्राक्ष के वृक्ष की जाति कुछ अलग होती है। नेपाल में रूद्राक्ष हिमालय के पहाड़ों पर पाए जाते हैं। भारत और नेपाल में पाए जाने वाले रूद्राक्ष का आकार बड़ा होता है जबकि मलेशिया और इन्डोनेशिया में पाए जाने वाले रूद्राक्ष मटर के दाने के आकार के होते हैं। बिना धारी वाला सबसे बड़े आकार का रूद्राक्ष इन्डोनेशिया के जावा में पाया जाता है। रूद्राक्ष का आकार हमेशा मिलीमीटर में मापा जाता है। कुछ रूद्राक्ष अखरोट के आकार तक के भी होते हैं।

रूद्राक्ष का अर्थ है रूद्र का अक्ष, इसकी उत्पत्ति भगवान शिव के अश्रुओं से हुई है। रूद्राक्ष को प्राचीन काल से ही आभूषण के रूप में, आत्म सुरक्षा के लिए, ग्रह शांति के लिए और आध्यात्मिक लाभ के लिए प्रयोग किया जाता है। मुख्य रूप से सत्रह प्रकार के रूद्राक्ष पाये जाते हैं। रूद्राक्ष का लाभ तभी प्राप्त होता है जब उसे नियमों का पालन करके धारण किया जाये। बिना नियम के रूद्राक्ष को धारण करने से कष्ट व हानि होती है।

रूद्राक्ष को धारण करने के नियम :–

- रूद्राक्ष को कलाई, कंठ और हृदय पर धारण किया जाता है।
- कलाई में बारह, कंठ में छत्तीस और हृदय पर एक सौ आठ रूद्राक्ष धारण करने चाहिए।
- एक रूद्राक्ष भी धारण किया जा सकता है परन्तु हृदय तक होना चाहिए।
- श्रावण माह, सोमवार या शिवरात्रि के दिन रूद्राक्ष को धारण करना सर्वोत्तम होता है।
- रूद्राक्ष को धारण करने से पूर्व उसको भगवान शिव को समर्पित कर मंत्र जाप सहित धारण करना चाहिए।
- रूद्राक्ष धारण करने वाले का आचरण व मन शुद्ध सात्विक होना चाहिए अन्यथा इसका लाभ प्राप्त नहीं होता है।

नेहा शर्मा
प्रशासनिक विभाग

लुप्तप्राय प्रजातियाँ : एक चिन्तन

वर्तमान समय में सृष्टि में ऐसे कई जीव हैं जो अब लुप्तप्राय से प्रतीत हो रहे हैं। असंख्य जीवों में कुछ के अब चित्र मात्र शेष रह गए हैं। ऐसा लगता है शायद आने वाली पीढ़ी लुप्तप्राय जीवों को मात्र कल्पना ही मानेंगी। चिन्ता का विषय यह है कि ऐसा क्यों घटित हो रहा है? इसका उत्तर व कारण मानव स्वयं है। अपने स्वार्थपूर्ति हेतु मनुष्य प्रकृति का जिस प्रकार से दोहन कर रहा है कहीं न कहीं जीवों के लिए जीने का संकट ही पैदा कर रहा है। जीव विज्ञान एवं प्रकृति विज्ञान को ध्यान से अध्ययन करें तो ऐसा लगता है मानो कई ऐसे जीव हैं जो अब यह सृष्टि छोड़ जाने को मजबूर हैं या चले गये। इसी चिन्ता को ध्यान में रखते हुए प्रकृति एवं जीवों का संरक्षण आवश्यक है। यदि शीघ्र ही इस खतरे को नहीं समझा गया तो प्रकृति चक्र में कई बदलाव निश्चित है। इन जीवों सम्बन्धित लुप्तप्राय जीवों का चिन्तन निम्नांकित है।

- प्रजातियों के खतरे के लिए प्राथमिक कारणों में से एक आवास की कमी है।
- शिकार और अवैध शिकार करने से दुनिया भर में जानवरों और मछलियों की संख्या पर एक बहुत ही विनाशकारी प्रभाव पड़ता है।
- प्रदूषण जैसे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और अपशिष्ट प्रदूषण विशेष रूप से प्लास्टिक के रूप में पशु प्रजातियों के लिए खतरे में एक प्रमुख भूमिका निभाता है।

अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ

अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ की लाल सूची के अनुसार गंभीर रूप से लुप्तप्राय प्रजातियों के विलुप्त होने का उच्चतम जोखिम है। भारतीय हाथी, बंगाल टाइगर, भारतीय शेर, भारतीय गैंडा, गौर, तिब्बती हिरन, डॉल्फिन, हिम तेंदुए, जंगली उल्लू और कई अन्य भारत में सबसे लुप्तप्राय प्रजातियाँ है।

जैव विविधता और लुप्तप्राय प्रजातियों पर प्रभाव

ग्रह की जैव विविधता के संरक्षण के लिए, हमें विचार करना होगा कि क्यों अनेक प्रजातियाँ लुप्त होती जा रही है। दुनिया में अधिकांश वन्य जीवों के लुप्तप्राय होने का प्रमुख महत्त्वपूर्ण कारक, प्रजातियों पर मानव प्रभाव और उनका परिवेश है। लोग लगातार अपने लिए अन्य प्रजातियों के संसाधनों और स्थलों का उपयोग करने लगे है, जो नकारात्मक रूप से कई जीवों के अस्तित्व दर को प्रभावित कर रहा है।

प्रजातियों के अनुरक्षण का महत्व

मानव अस्तित्व के लिए सभी प्रजातियों का संरक्षण आवश्यक है। इस पृथ्वी पर जीवों को खाद्य शृंखला में एक अनोखी जगह के रूप में देखा जाता है जो पारिस्थितिकी तंत्र में अपने विशेष तरीके से योगदान करने में मदद करता है। पौधे उनके औषधीय मूल्यों और अन्य कारणों के लिए महत्त्वपूर्ण है इसलिए उन्हें संरक्षित किया जाना चाहिए ताकि वे लुप्तप्राय प्रजातियों में ना आ सके। वन्यजीवों का संरक्षण उनके प्राकृतिक आवास के साथ लुप्तप्राय पौधों और जानवरों की प्रजातियों की रक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण है। मुख्य चिंता निवास स्थान को संरक्षित करना है ताकि वन्यजीवों और यहाँ तक कि मनुष्य की भावी पीढ़ियाँ इसका आनंद ले सकें।

प्रेरणा त्रिपाठी
द्वितीय वर्ष, बी.एससी.बी.एड.

विद्यार्थी जीवन में गीता का महत्त्व

गीता विद्यार्थियों को कर्म करने अर्थात् अध्ययन एवं विभिन्न क्षेत्रों में पारंगत होने की प्रेरणा देती है। यह भागने की नहीं अपितु जागने की बात कहती है।

कर्म किये जा फल की इच्छा मत कर तू इंसान।
जैसा कर्म करेगा वैसा फल देगा भगवान।।

गीता द्वारा जनसाधारण एवं विद्यार्थियों में साहस, दृढ़निश्चय, धर्मनिष्ठा और देशप्रेम की भावना प्रज्वलित होती है। किंतु दुर्भाग्य की बात यह है कि आज युवा पीढ़ी के मन–मस्तिष्क में टी.वी., साहित्य, समाचार–पत्रों के माध्यमों से चिन्तित भावना का वर्चस्व स्थापित हो रहा है। आज हमारी सोच, चिन्तन, भावनाएँ, संवेदनाएँ संकुचित होती जा रही है। युवाओं के भीतर संस्कारों का दरिया सूखता जा रहा है। इसलिए गीता में श्रीकृष्ण ने सभी युवाओं को बन्धुता, समानता एवं स्वतंत्रता का संदेश पाँच हजार वर्ष पूर्व देकर एक प्रेरक बन गए हैं। वर्तमान में विद्यार्थियों का यही परम कर्त्तव्य है कि अपनी मन बुद्धि को स्थिर रखते हुए, गीता की भावना के अनुकूल अध्ययन करने तथा जीने का प्रयास करें। अतः गीता का अध्ययन, प्रत्येक विद्यार्थी को करना चाहिए। इसमें जीवन की प्रत्येक समस्या का समाधान निहित है। प्रेरणा प्राप्त करने का सर्वोच्च स्त्रोत 'गीता' है।

वंशिका जैन
द्वितीय वर्ष, विज्ञान संकाय

संकट

हमें देश को बचाना है,
कोरोना को मिटाना है,
वापस वह दिन लाना है,
संकट को हमें मिटाना है,
हमें देश को बचाना है, कोरोना को मिटाना है।
सब मिलकर हाथ बढ़ाएंगे, महामारी से लड़ जायेंगे,
हाथ मिलाने को ना कह, सब जोड़ हाथ रिश्ते निभायेंगे।
अपनो को सुरक्षित रख मजबूत हम बनाएंगे,
हमें देश को बचाना है, कोरोना को मिटाना है।
परिवार को खुशियों संग फिर से वही बनाना है,
खुद की कर चिन्ता देश को सुरक्षित बनाना है।
हमें देश को बचाना है, कोरोना को मिटाना है,
घूम–घूम सन्देश हमें घर–घर पहुँचना है,
हमें देश को बचाना है, कोरोना को मिटाना है।

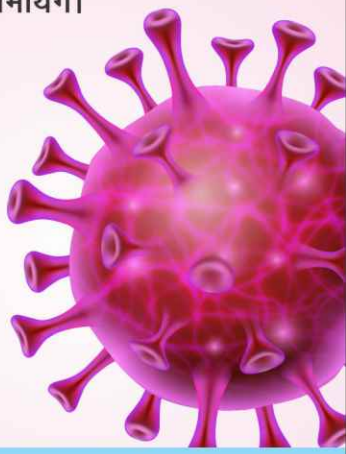

निकिता गुलाबानी
तृतीय वर्ष, कला संकाय

रंग हज़ार

प्रकृति प्रदत्त रंग हज़ार,
सदा रखें हम यही विचार।
यह कितना हमको देती है,
कुछ नहीं हमसे लेती है।
संरक्षण इसका एक ही आधार,
करें क्यों दोहन हम हर बार।
धरती छेडें, अंबर छेडें,
दे हम पीड़ा इसे हर बार।
जल, हवा, जीवन मधुमास,
इससे हमको सदा यह आस।
पर हम कहाँ मानें इसे खास,
करते हम सदा इसे निराश।

जैतावत वर्षा
प्रथम वर्ष, कला संकाय

वर्तमान शिक्षा में नवाचार प्रयोग आवश्यक

''नवाचार कोई नया कार्य करना ही नहीं अपितु किसी भी कार्य को नये तरीके से करना ही नवाचार है।'' परिवर्तन, प्रकृति का नियम है। परिवर्तन से ही विकास के चरण आगे बढ़ते हैं। परिवर्तन एक गतिशील, जीवन्त और आवश्यक क्रिया है जो समाज को वर्तमान व्यवस्था के अनुकूल बनाती है। यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यक है। इन्हीं परिवर्तनों से व्यक्ति और समाज को स्फूर्ति, चेतना, ऊर्जा एवं नवीनता प्राप्त होती है। शिक्षा सभ्य जीवन की आधारशिला है। आज के युग में शिक्षा मानव के आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए नितान्त आवश्यक है। इसमें मानव की शारीरिक, मानसिक व चारित्रिक क्षमता का विकास होता है। यद्यपि प्राचीन काल में श्रेष्ठ शिक्षा पद्धति के कारण भारत को विश्व गुरू माना जाता था और अन्य देशों के शिक्षार्थी यहाँ ज्ञान प्राप्त करने आते थे। परन्तु वर्तमान में हमारी शिक्षा राष्ट्रीय लक्ष्य के अनुरूप न रहकर मूल्यहीन, विचारहीन बनती चली गई।

वर्तमान शिक्षा में नवाचार को अपनाने व उनमें परिवर्तन करने के लिए आवश्यक है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली राष्ट्रीय एवं सामाजिक जीवन के अनुकूल हो। नवाचार को अपनाने के लिए आवश्यक है कि लोकतन्त्रात्मक राष्ट्र में प्रत्येक नागरिक शिक्षित हों, जिससे वह सभ्य नागरिक बनकर शिक्षा में हुए नवाचार को अपनायें परन्तु यह तभी सम्भव है जब प्रचलित शिक्षा प्रणाली जीवनोपयोगी हो और देश की आवश्यकताओं के अनुरूप हो, जिससे संसार में हमारी शिक्षा प्रणाली आदर्श रूप में जानी जा सके।

डिम्पल ज्योतियाना
सहायक आचार्य, अंग्रेजी विभाग

भारतीय राष्ट्रीय आभासी ग्रंथालय : एक परिचय

आभासी पुस्तकालय डिजिटल पुस्तकालय की अगली पीढ़ी की पुस्तकालय है जो किसी भी स्थान पर इलेक्ट्रॉनिक रूप से उपलब्ध होने वाली जानकारी को इलेक्ट्रॉनिक नेटवर्क की मदद से प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक में उपयोग की जाने वाली सामग्रियों की सूचना प्रदान करती है। इसके द्वारा दुनियाभर के पुस्तकालय और ज्ञान केन्द्र से अपने पाठ्य तक पहुँच सकते हैं। आभासी पुस्तकालय ने सूचना संसाधनों के चयन, अधिग्रहण और प्रबंधन के पारंपरिक तरीके को बदल दिया है। आभासी पुस्तकालय पाठक, पुस्तकालय और तकनीकी प्रक्रिया के समय को बचाने पर जोर देती है। आभासी पुस्तकालय में किताबें, पत्रिकाओं और अन्य कई सूचना स्त्रोंतों और प्रारूपों ऑडियो और विडियो सहित संसाधनों के आभासी दस्तावेज और एक स्थान भी प्रदान करता है। ये स्थान कम्प्यूटर, मोबाईल डीवाइस, स्मार्ट फोन हो सकते हैं। आभासी पुस्तकालयों में जोर संगठन और पहुँच पर है, भौतिक संग्रह पर नहीं। एक आभासी पुस्तकालय में संसाधनों को व्यवस्थित किया जाता है ताकि उपयोगकर्ताओं के किसी विशेष समूह के स्त्रोतों की आसानी से पहचान की जा सके। वर्चुअल संग्रह में आइटम एक सर्वर पर नहीं रहता है, लेकिन वे संग्रह तक पहुँचने में उपयोगकर्ता की सहायता करने के लिए एक सामान्य इंटरफेस साझा करते हैं। आभासी पुस्तकालयों में डिजिटल के माध्यम से डिजिटल प्रारूप में संग्रह का आयोजन किया है।

आभासी पुस्तकालयों में अपने उपयोगकर्ताओं को चैट सेवाओं या वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग करने की अनुमति देता है। नए उपकरणों और उपकरणों को संचार और जन माध्यमों के क्षेत्र में डिजाईन और विज्ञापन किया जाता है। पुस्तकालय पेशे और उनके पेशेवर को लोगों तक उपयोगी जानकारी पहुँचाने के लिए पुस्तकालय सेवा के प्रावधान में तकनीकी सहायता है। जैसे दूरसंचार, कम्प्यूटर और सूचना प्रोद्यौगिकी का उपयोग करना चाहिए। यह अधिक व्यक्तिगत स्पर्श सूचना सेवाओं और डिजिटल लाइब्रेरी वातावरण है जो उपयोगकर्ताओं और दस्तावेज के बीच कोई इंटरएक्टिव नहीं है लेकिन वर्चुअल लाइब्रेरी वातावरण में अधिक व्यक्तिगत है।

आभासी पुस्तकालय का उद्देश्य :–

- आभासी पुस्तकालय के माध्यम से जीवन, शिक्षण अनुसंधान की गुणवत्ता में सुधार।
- यह दूरस्थ, ऑनलाईन आधारित, ऑनलाईन संसाधन और सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार।
- सामग्री, जो इलेक्ट्रानिक प्रारूप में उपलब्ध है और उनकी पहुँच सुनिश्चित करता है जो किसी के लिए आवश्यक है।
- नवाचार को बढ़ावा देना, समस्याओं और समाधानों के लिए स्वामित्व निर्माण।
- हमारी विरासत और स्मृति को संरक्षित करने में।
- दुनियां में कहीं भी एक ही समय में उपयोगकर्त्ताओं को समान सामग्री प्रदान करना।
- खुली पहुँच को बढ़ावा देना।
- दुनिया की सांस्कृतिक और वैज्ञानिक विरासत को सभी के लिए सुलभ बनाना।

आभासी पुस्तकालय की विशेषताएं :–

- वैश्विक तरीके से अद्यतन जानकारी के लिए त्वरित और व्यापक पहुँच प्रदान करता है।
- इसने पुस्तक सामग्रियों को सूचीबद्ध करने की पारंपरिक पुस्तकालय प्रणाली को बदल दिया है, गैर पुस्तक सामग्री की कैटलॉगिंग में केवल डेटाबेस ही नहीं बल्कि वेबसाइट्स भी शामिल हैं।
- इसका जोर एक्सेस पर है न कि कलेक्शन पर।
- समय बचाने वाला।

आभासी पुस्तकालय का लक्ष्य :–

- सभी के लिए शिक्षा या एक–एक शिक्षा एवं सूचना।
- सभी लिंग और सामाजिक श्रेणी अंतराल और डिजिटल विभाजन को पूरा करने के लिए।
- नए विकास लक्ष्य।
- डिजिटल विभाजन को पाटना।

डॉ. कपिल सिंह हाडा
पुस्तकालयाध्यक्ष

प्रकृति की गोद में प्राचीन जल प्रबंधन

आधुनिक काल में शोध एवं सर्वे से विद्वानों ने सिद्ध किया कि जब अंग्रेज भारत आये तो उन्होंने देखा कि यह प्रकृति प्रेमी धरा बहुत समृद्ध है। लोग पर्यावरण के प्रति सभ्य और शिक्षित हैं। गाँवों में अपनी जरूरत से ज्यादा उत्पादन उनके आगे बढ़ने में मददगार था। समृद्ध ग्रामीण संस्कृति से नगर व शहर भी टिकाऊ है। प्राचीन काल से भारतीयों ने अपनी ज़मीन, जल और जलवायु के संसाधनों का कुशल उपयोग करना सीख लिया था। प्रत्येक गाँव ने आस–पास की ज़मीन को अनुभव एवं जरूरतों के अनुसार खेत–खलिहान, चारागाह, जंगल और बाग–बगीचों के रूप में प्रकृति प्रेमी प्रणाली विकसित कर ली जो एक दूसरे पर निर्भर थी। यह स्थानीय जरूरतों और जलवायु के अनुकूल थी। बारिश कम ज्यादा होने के सामाजिक और आर्थिक प्रभाव को नगण्य करने में सक्षम थी। भारत में बारिश के अल्प दिन होने के कारण प्राचीन समय से ही भारतीयों में जल संचय और उपयोग की असंख्य तरकीबें विकसित की थी जिसमें आगामी कुछ वर्षों के लिए जल की जरूरतें पूरी होती रहें। ऐसा पर्यावरण अनुकूल जल प्रबंधन को वैश्विक समाज में भारतीय सनातन परम्परा ने विश्व में सबसे अच्छे तरीके से विकसित की। जहाँ भारतीयों ने नदियों पर विशाल बाँध ही बनवाये बल्कि अपने ग्राम के ऊपर पड़ने वाले बरसाती पानी को रोकने हेतु अनुकूल तकनीक विकसित की।

ब्रिटीश भारत आये तब तक देश में स्थानीय स्तर पर विकसित जल प्रबंधन तकनीकी को सम्पत्ति के अधिकार और धार्मिक रीति–रिवाजों से संरक्षण मिला हुआ था। चारागाह, जंगल, बाग–बगीचों एवं तालाबों पर सामाजिक स्वामित्व था। जंगल की जमीन का कुछ हिस्सा कुछ विशेष किस्म के पेड़ के लिए रखा जाता था तालाब और जल संरक्षण स्थान के आस–पास की जगह को पवित्र माना जाता था। इस बात के प्रमाण भी है कि स्थानीय समूहों में पर्यावरण से जुड़ी चीजों का जाति आधारित बँटवारा भी खेती प्राकृतिक संसाधनों का कुशल एवं टिकाऊ उपयोग किया जाता था। मानव जीवन के स्थायित्व हेतु जैव–विविधता का उपयोग किया जाता है।

प्राकृतिक संसाधनों के कुशल प्रबंधन से भारत के गाँव काफी सामान उत्पादित करते थे उनकी अतिरिक्त पैदावार शहरों–नगरों को चलाने के काम आती एवं निर्यात के सामान उपलब्ध कराती। प्राचीन भारत में एक वृहद, कुशल एवं फलती–फूलती अर्थव्यवस्था थी जिसका पूरा श्रेय पर्यावरण अनुकूल जल प्रबन्धन को जाता था। वर्तमान में स्थानीय स्तर पर प्राचीन संरक्षण एवं पर्यावरण के अनुकूल तकनीकी के माध्यम से भारत को पुनः प्रकृति की गोद में स्थायी स्थान प्रदान करवायें ताकि जगत गुरू भारत पुनः प्रकृति का संरक्षण करते हुए विश्व को एक नयी दिशा प्रदान करें। हमारी सनातन परम्परा एवं प्रकृति को समर्पित ग्रंथों का पुनः अवलोकन करके यथार्थ के धरातल पर लाने की चेष्टा करनी होगी।

सुरेश कुमार शर्मा
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग

पर्यावरण को सकारात्मकता प्रदान करता लॉकडाउन

आज सम्पूर्ण विश्व कोरोना वायरस के कारण भयावह मानवीय त्रासदी से गुजर रहा है। कोविड–19 जैसी महामारी जो कि एक संक्रामक रोग है। इसे रोकने के लिए भारत सरकार एवं राज्य सरकार के संयुक्त तत्त्वावधान में 25 मार्च से देश व्यापी लॉकडाउन घोषित किया गया है जिसकी पालना देश का प्रत्येक नागरिक निष्ठा से कर रहा है। इस लॉकडाउन से भले ही सभी देशों की अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है परन्तु इसमें भी एक आशा की किरण यह नज़र आती है कि पर्यावरण अवश्य ही सकारात्मक प्रभाव प्रदान करेगा। पर्यावरण का सीधा प्रभाव जीव–जन्तु, पेड़–पौधों एवं मानव जीवन से सम्बन्ध रखता है।

इसी विषय को ध्यान में रखते हुए लॉकडाउन के सकारात्मक प्रभाव क्या–क्या हो सकते हैं पर मैंने विचार साझा करने का प्रयास किया है। वर्तमान समय में प्रदूषण के कारण श्वास तोड़ती वायु अब शुद्ध होने लगी है। हर समय धुँए से काले रहने वाले महानगरों का आसमान नीला दिखाई देने लगा है और रात को तारे चमकने लगे हैं। देश के प्रमुख चौराहों पर भी वायु प्रदूषण नाम की कोई समस्या नहीं बची है।

प्रकृति के लिए यह बहुत अच्छा संकेत है कि लॉकडाउन के चलते देश में वायु, जल व ध्वनि प्रदूषण में भारी गिरावट आई है साथ ही ओजोन परत में सुधार के संकेत मिले हैं। दुनिया भर में प्रदूषण के स्तर में अचानक गिरावट से ओजोन परत पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। सड़कों पर कम वाहनों और लोगों द्वारा अपनी गतिविधियों के बारे में सतर्कता के साथ ओजोन परत को आखिरकार कुछ श्वास लेने की जगह दी है। अतः यह सिद्ध करता है कि सामूहिक वैश्विक कार्यवाही से फर्क पड़ सकता है और आने वाले समय में ओजोन परत की पूर्ण चिकित्सा संभव हो सकती है। जिस तरह से लॉकडाउन के बाद सारी दुनिया में सकारात्मक प्रभाव देखे गए हैं। उससे ये अनुभव सामने आया कि ठोस नीति बनाकर स्वेच्छा से अलग–अलग शहरों में साल में एक बार लॉकडाउन करके प्रकृति के संतुलन को साधा जा सकता है। जिस प्रकार भारतीय संस्कृति में व्रत रखने का महत्व है, वैज्ञानिक दृष्टि से व्रत के दौरान हमारा शरीर स्वयं का शोधन करता है जिससे शरीर की पाचन क्रिया ठीक हो जाती है उसी प्रकार साल में 15 दिनों के लिए लॉकडाउन से प्रकृति को अपनी पुरानी रंगत में लौटने का अवसर मिल सकता है। देश ही नहीं अपितु पूरे विश्व में लॉकडाउन के पर्यावरणीय सकारात्मक प्रभाव देखने को मिले हैं।

जिसके अहम् बिन्दु निम्नांकित है :–

- 33 प्रतिशत तक धरती की सतह पर कम्पन में कमी महसूस हुई।
- हवा की गुणवत्ता का स्तर लॉकडाउन के दौरान कुछ इलाकों में जहाँ आम दिनों में यह स्तर 100–150 के बीच रहता था। यह घटकर 50 प्रतिशत हो गया है अर्थात् हवा पहले से शुद्ध हुई है।
- बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के अनुसार राजहंस प्रवास में 25 प्रतिशत वृद्धि हुई है इनकी संख्या इस वर्ष अप्रैल में 1.5 लाख से अधिक बताई जा रही है।
- लॉकडाउन में सड़क परिवहन, ट्रेन और हवाई सफर सब कुछ बंद है। लॉकडाउन की वजह से जहाँ लोगों को परेशानी उठानी पड़ रही है वहीं इसी बीच कुदरत अब खुलकर साँस ले रही है।
- नासा के अनुसार उत्तर भारत में एयरोसोल लेवल पिछले 20 वर्षों में सबसे कम मापा गया है।
- इससे पारिस्थितिकी तंत्र संतुलित हो रहा है।
- वायुमण्डलीय गैसों के संघटन में संतुलन की सम्भावना कई गुना बड़ गयी है।
- नाइट्रोजन ऑक्साइड का स्तर लगातार कम हो रहा है जो कि गाड़ियों और फेक्ट्रियों के बन्द होने से सम्भव हुआ है।
- कोरोना के भय ने चाहे–अनचाहे मानव जीवन को अनुशासित भी किया है जो कि सोश्यल डिस्टेन्सिंग के रूप में सामने आ रही है।

उम्मीद कर सकते हैं कि एक–दो माह में जब देश–दुनियां में कोरोना महामारी का असर कम होगा तब प्रकृति और भी अधिक खिली–खिली और अधिक महकी–महकी नज़र आएगी तथा मनुष्य इन परिवर्तनों से कुछ सीख लेगा और पर्यावरण संरक्षण करना सीख जाएगा।

रूचि चौहान
सहायक आचार्य, प्राणी शास्त्र विभाग

प्रकृति विराट में तुच्छ

प्रकृति क्या है ? सरलतम और बेहतरीन जवाब है कि प्रकृति क्या नहीं है! हम जो देख रहे हैं और जो नहीं भी देख रहे हैं किन्तु अनुभव कर रहे हैं वह सब प्रकृति है। प्रकृति को हम शब्दों की सीमा में बाँधकर छोटा करना अनुभवहीनता एवं नश्वरता का परिणाम प्रदान करते हैं। प्रकृति विराट है, प्रकृति अथाह है, हमें इसके स्वरूप को समझना चाहिए। प्रकृति का सौन्दर्य काल्पनिक न होकर एक शाश्वत एवं अदृश्य शक्ति के रूप में ईश्वरीय काल्पनिकता लिए हुए हैं। प्राचीन काल से ही भारत में प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर चलने की अनवरत परम्परा रही है। सजीव हो या निर्जीव सबको प्रकृति का आश्रय लेना ही पड़ता है।

भारत के प्राचीन वैज्ञानिकों अर्थात् ऋषि मुनियों ने अपने उपदेश में धर्म संस्कृति, व्यवहार, पूजा, त्योहार आदि में प्रकृति को एक निश्चित पूज्य स्थान प्रदान करते हुए हमें ये सीख दी है कि हे मानव! तुम्हें प्रकृति से तादात्मय बिठाते हुए अपने सत्कर्म करने चाहिए। ऐसा हम सनातन धर्म से करते आ रहे हैं जिससे आज तक सब कुछ उपयुक्त चल रहा था। परन्तु वर्तमान की इस भौतिकवादी दौड़ में प्रकृति से हम अपना सन्तुलन खो बैठे एवं दुखों को हमने आमंत्रित कर दिया। कभी पहाड़ दुखों से एवं धरती कम्पनता सी प्रतीत होने लग रही है। वर्तमान की इन समस्याओं का कारण मात्र प्रकृति के साथ की छेड़खानी है। हे मनुष्य! यदि आने वाली पीढ़ी को प्रकृति के सुन्दर दर्शन कराने हैं तो उसको नमन करते हुए उसके संरक्षण के प्रति दायित्व निभाना चाहिए। प्रकृति के आगे मनुष्य कभी विराट नहीं हो सकता प्रकृति विराट है मनुष्य सदा तुच्छ है। हमें प्रकृति को नमन करना चाहिए।

तनुजा बुनकर
द्वितीय वर्ष, विज्ञान संकाय

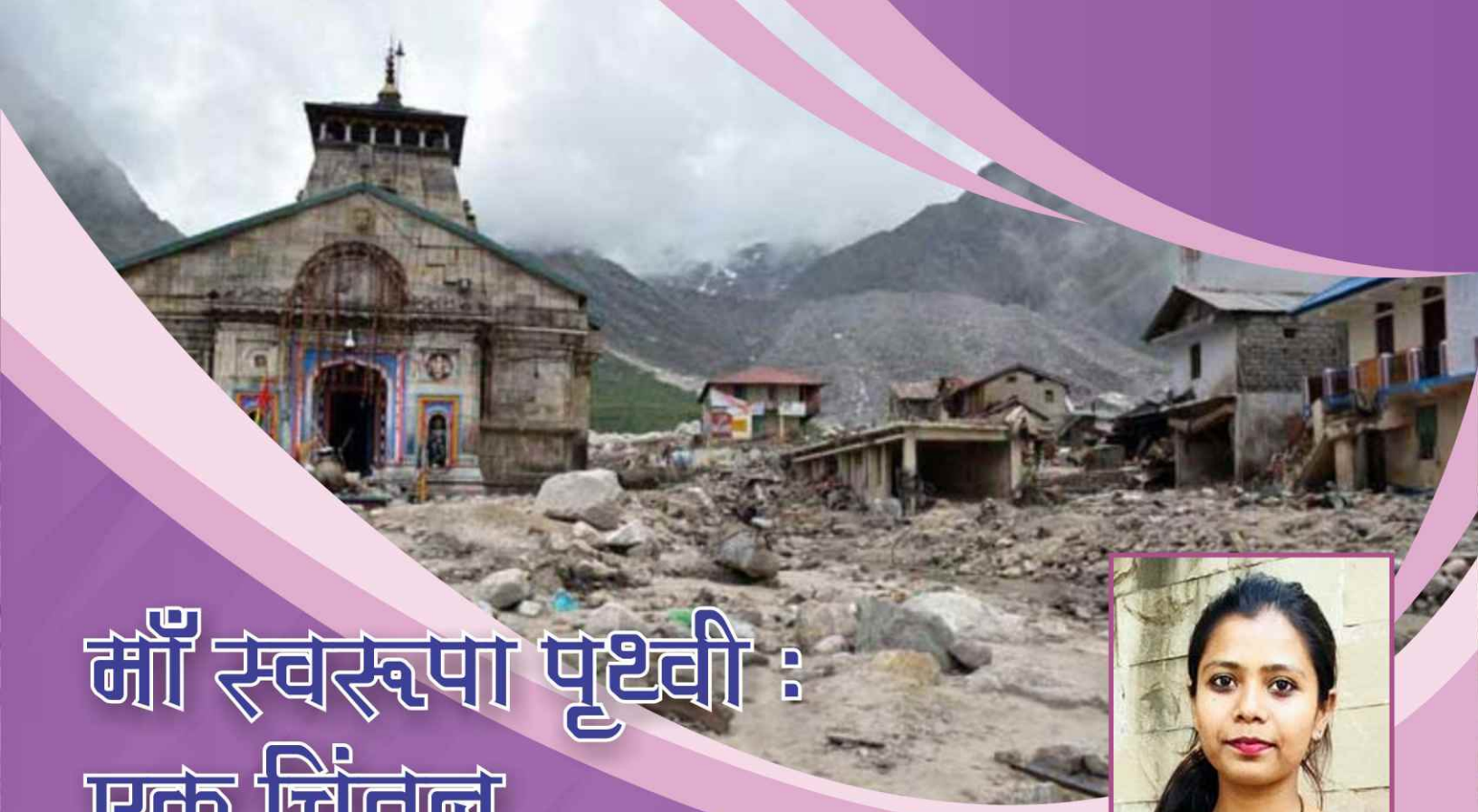

माँ स्वरूपा पृथ्वी : एक चिंतन

पृथ्वी को माँ स्वरूपा माना जाता है परन्तु मनुष्य अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए सब कुछ भूलकर उसका दोहन करने की ओर कदम बढ़ाता रहता है। हम बचपन से यह पढ़ते आ रहे हैं कि यह हमारा परिवार है किन्तु कभी–कभी हम परिवार के इस मुखिया को दुखी करने से नहीं चूकते हैं। पृथ्वी माँ के समान हमारी गलतियाँ सहन करती रहती है परन्तु यह कहा जाता है कि सहनशीलता की भी एक सीमा होती है। वर्तमान समय में शायद हम यह भूल गये हैं कि पृथ्वी को हम अत्यधिक कष्ट पहुँचा रहे हैं।

वैज्ञानिक तकनीक एवं कृत्रिम साधनों ने इंसान का जीवन इतना सरल बना दिया है कि इंसान अपनी माँ की परवाह करना ही भूल गया है। वाहन, कारखाने, कूड़ा–करकट, तकनीकी सुविधाएं ऐसी अनेक चीजें हमारी माँ को बीमार कर रही है। इंसान अपनी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति इसी धरती माँ से प्राप्त करता है यह सभी उसी विनम्र एवं सहनशील माँ की देन है। लेकिन इंसान ने इसकी भी हदें पार कर दी है। इंसान इतना मतलबी हो गया है कि उसे अपनी माँ की चीजों का मूल्य ही नहीं पता। इतनी प्राकृतिक घटनाऐं हुई फिर भी नहीं जान सका। वो कहते हैं ना कि भगवान हर इंसान को मौका देता है अपनी गलतियाँ सुधारने का और एक ही नहीं हज़ारों मौके देता है परन्तु क्या फायदा। जब हद बेहद हो जाती है तब मानव संकट में आ जाते हैं जैसे कि पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का क्षरण और सभी प्राकृतिक आपदाएं इन सभी में इंसान का किसी ना किसी तरह से हस्तक्षेप है और इन सभी का प्रभाव माँ और उसके परिवार को झेलना पड़ता है। सबसे ज्यादा दु:ख यहाँ भी माँ ही झेलती है पर फिर भी परिवार समझता नहीं है और फिर वापस हद बेहद हो जाती है। तब भगवान ही कुछ करते हैं जैसे कि वर्तमान में कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया को मुट्ठी में कर रखा है। भयभीत मनुष्य स्वयं की सुरक्षा के लिए अपने घर में बैठ गया। इस एक वायरस ने दुनिया को तो हिला दिया लेकिन इसने हमारी माँ को राहत दी है जो हम कई सालों में भी नहीं दें सके। शायद ये भी भगवान का एक संदेश है इंसान के लिए... अपनी माँ का ध्यान रखने के लिए.. अपनी माँ की कीमत समझने के लिए.. अपनी माँ और परिवार को खुश रखने के लिए!

मैं समस्तजनों एवं अपने परिवार से उम्मीद करती हूँ कि वे जात–पात, रंगभेद, अंधविश्वास, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, आतंकवाद जैसी बातों को भूलाकर सामाजिक सद्भाव बनाए रखें एवं पृथ्वी को सुरक्षित एवं संरक्षित करने का सफल प्रयास करें। पृथ्वी हमारी माँ है इसे खुशहाल बनाना ही हमारा कर्त्तव्य है।

अंजलि गुलानिया
विज्ञान संकाय, सत्र 2015–18

गुंजन परिहार
प्रथम वर्ष, विज्ञान संकाय

नेहा राठौड़,
कला संकाय, सत्र 2015–18

ज्योति शर्मा
विज्ञान संकाय, सत्र 2015–18

आशी अग्रवाल
प्रथम सेमेस्टर, बी.बी.ए. संकाय

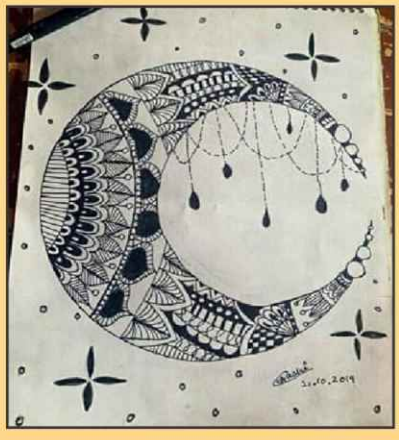

यह लेखकों के अपने मौलिक विचार है।

KNOWLEDGE IS POWER

श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी गर्ल्स कॉलेज

अजमेर रोड़, किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान) 305801

दूरभाष : 01463-307000, ई-मेल : info@rkgirlscollege.edu.in

वेबसाईट : www.rkgirlscollege.edu.in